आशीर्वचन

उपाध्याय प्रवर श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

मुझे यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है पूर्व में प्रकाशित **सचित्र भगवान महावीर जीवन चारित्र** का चौथा संस्करण प्रकाशित हो रहा है जिसका लेखन स्व. श्री पुरुषोत्तम जैन व श्री रवीन्द्र जी जैन ने संयुक्त रूप से किया तथा संपादन विदुषी साध्वी डॉ. स्मृति जी महाराज ने किया है। सर्वाधिक प्रसन्नता इस बात की है गत तीन संस्करण जनता में इतने लोकप्रिय हुए की सभी ग्रन्थ देखते ही देखते समाप्त हो गए। अब चतुर्थ संस्करण प्रकाशित हो रहा है, यह भी पाठक वर्ग की जिज्ञासाओं को शान्त करेगा।

भगवान महावीर के दिव्य-भव्य जीवन-दर्शन को जैन-जैनेत्तर के बीच अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हो। स्कूल, कॉलेज, शोध केन्द्रों, जैनेत्तर लेखकों तक भी यह पुस्तक पहुंचे। नवीन संस्करण के लिये बधाई व शुभकामना !

रवीन्द्र मुनि, उपाध्याय

प्रेम सुख धाम,
देहरादून

प्रकाशकीय

पिछले 50 वर्षों से हमारी संस्था 25वीं महावीर निर्वाण शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब के नाम से काम करती थीं, अब वही संस्था 26वीं महावीर जन्म-कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति, पंजाब के रूप में सारे पंजाब में जैनधर्म का प्रचार कर रही है। अब तो पंजाबी जैन साहित्य पर 65 ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं। भविष्य में यह प्रचार का कार्य अभी तक चालू है।

जिनशासन प्रभाविका साध्वी जैन ज्योति श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज इस संस्था की संस्थापक प्रेरिका हैं। यह समिति जैन एकता, शाकाहार व जैन संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित संस्था है। समिति की प्रेरणा से पंजाबी विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना हुई। वहां समिति व साध्वी जी दोनों ने विपुल मात्रा में जैन साहित्य पहुंचाया। इण्टरनेशनल पार्वती जैन अवार्ड, इण्टरनेशनल भगवान महावीर शाकाहार अवार्ड, आचार्य श्री आत्माराम भाषण माला आदिश्वर धाम कुप्पकला में साध्वी श्री स्वर्णा जैन पुस्तकालय की स्थापना समिति की प्रमुख देन है।

जिनशासन प्रभाविका, जैन विभूति, संथारा साधिका, पंजाबी जैन साहित्य प्रेरिका, उपप्रवर्त्तिनी, महासाध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की प्रमुख शिष्या, शान्त मुद्रा, प्रवर्त्तिनी, गुप्त तपस्विनी, साध्वी श्री सुधा जी महाराज ने अब साहित्य प्रकाशन का कार्य अपने हाथों में लिया है। प्रभु महावीर के 2600साला जन्म दिन पर हमारी संस्था की ओर से यह तुच्छ भेंट प्रभु महावीर के चरणों में समर्पित की थी। हमारी समिति का प्रमुख कार्य तो पंजाबी भाषा के अन्दर धर्म-प्रचार का रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र के तीन संस्करण पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं। अब यह चतुर्थ संस्करण प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष अनुभव हो रहा है क्योंकि यह भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण कल्याणक व संथारा साधिका उपप्रवर्तिनी गुरणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दीक्षा दिवस के अवसर पर और उनकी शिष्या प्रवचन प्रभाविका डा. स्मृति जी महाराज (डबल एम.ए.) की सदप्रेरणा से प्रकाशित हो रहा है। हमें आशा है कि पिछले संस्करणों की भांति इस संस्करण का भी विद्वत् वर्ग सम्मान करेगा। आशा करते हैं कि इस ग्रन्थ के नवीन प्रकाशन से देश विदेश में जैन और जैनोत्तर लोग भगवान महावीर और उनकी शिक्षाओं को जानेंगे और यह ग्रन्थ एक संदर्भ ग्रन्थ के रूप में उपयुक्त होता रहेगा। हमारी स्मृति दोनों चारित्र आत्माओं को यह चतुर्थ संस्करण समर्पित करते हुए परम हर्ष का अनुभव करती है और ग्रंथ प्रकाशन में सहायक दानी सज्ननों व विमल विवेक के प्रेरक समाज गौरव स्व. श्री विमल जैन अंशु का भी आभार प्रकट करते हैं।

संयोजक

डा. संदीप जैन, लुधियाना

प्राक्कथन

-डा. प्रद्युम्न शाह सिंह

भारतीय संस्कृति के गौरव को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक कि जैन धर्म की विरासत को न समझा जाए। जैन धर्म का एक बड़ा पुराना गौरवशाली इतिहास है। भगवान ऋषभ देव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर के रूप में सर्वमान्य हैं। कालगणना के आधार पर वे उतने पुराने हैं कि उन्होंने कृषि की शुरुआत करवाई। यंत्रों का प्रयोग सिखाया। उन्होंने अपनी पुत्री ब्राह्मी को लेखन विद्या तथा सुन्दरी को गणित विद्या का ज्ञान कराया था।

ऋषभदेव के योगदानों की चर्चा वैदिक, जैन धर्म ग्रंथों में भरपूर मात्रा में प्राप्त होती है। प्रथम और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर के मध्य के 22 तीर्थंकरों के आदरार्थ उनका नामोल्लेख करना यहां योग्य होगा। क्रमशः उनके नाम हैं-अजितनाथ, संभवनाथ, अभिनंदन, सुमतिनाथ, पदमप्रभ, सुपार्श्व, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, पुष्पदंत, शीतलनाथ, श्रेयांस, वासुपूज्य, अनन्त, धर्मनाथ, शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ, सुव्रतनाथ, नमिनाथ, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ। यह तीर्थंकरों का संक्षिप्त नामोल्लेख जैन धर्म की वृहद विरासत का उल्लेख करता है।

जैन धर्म के प्रवर्त्तक भगवान महावीर नहीं अपितु भगवान ऋषभ हैं किन्तु जैन शब्द का प्रयोग भगवान महावीर के बहुत बाद होना शुरु हुआ। यह पूर्व में श्रमण धर्म, अर्हत् धर्म, निर्ग्रन्थ धर्म तथा व्रात्य धर्म आदि नामों से जाना जाता रहा है। जैन धर्म आत्मविजय का धर्म है। भगवान ने कहा है-

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्ञएजिणे।
एगं जिणेज्ञ अप्पाणं एस से परमो जओ।। (उत्तराध्ययन सूत्र अ. 9, गाथा 34)

अर्थात् जो हजारों हाथियों द्वारा लड़े जाने वाले संग्राम में विजयी होता है, उससे भी अधिक बड़ा विजेता वह है जो अपने आप को जीत लेता है। भगवान महावीर ने चूंकि अपने ऊपर जीत प्राप्त की इसीलिए कोई बाह्य शक्ति उन पर जीत कभी हासिल नहीं कर सकी।

जैन धर्म वास्तववादी (Realistic)धर्म है। यह वैदिकधर्म की भांति अद्वैतवादी या बौद्धधर्म की भांति शून्यवादी अर्थात् आदर्शवादी (Idealistic) नहीं है। यह धर्म परमार्थ और व्यवहार जगत दोनों को सत्य मानता है। इस धर्म में ऐसी चर्चा नहीं होती कि लोगों का कष्ट हरने के लिए किसी भगवान की आत्मा ने अवतार लिया, अपितु इस धर्म में इस बात पर बल दिया गया है कि जन्म पाकर यदि व्यक्ति अपनी आत्मा को कर्म कषायों (राग-द्वेष) से मुक्त कर सका तो वह अध्यात्म पथ का सच्चा राही है। वही साधक मोक्ष का अधिकारी है और वही साधना जनहितकारी भी है। भगवान महावीर ने वह मार्ग दिखाया जिससे लोगों का कष्ट दूर हो सके। लोगों को सच्चे धर्म की जानकारी हो सके। उनका आत्मविश्वास जग सके। लोग अपने द्वारा अपना उद्धार कर सकें। आत्म कल्याण करने वाला ही पर कल्याण कर सकता है।

भगवान ने कहा है कि पुरिसा तुममेव तुममित्तं किं बहिआ मित्तमिच्छसि। आप स्वयं अपने मित्र हो आप बाहर कहां मित्र खोज रहे हो? भगवान ने सिखाया तुम आत्म श्रद्धा, आत्म विश्वास जगाओ तभी तुम आत्मा की शक्ति को पहचान सकोगे। हर आत्मा में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त दर्शन, अनन्त चरित्र की क्षमता है। राग-द्वेष आस्रव का कारण है तथा संवर निर्जरा मोक्ष का कारण हैं। समय गोयम मा पमायए अर्थात् समय राग-द्वेष में मत गंवाओ। भगवान महावीर ने मानवता के सम्मुख यही तत्वज्ञान उपस्थापित

किया है। वे अहिंसा, संयम और तप के पर्याय थे। अहिंसा का पुजारी ही दूसरे को अहिंसा के पथ पर ले जा सकता है। सत्य का पुजारी ही दूसरे को सत्य का पुजारी बना सकता है। ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का अभ्यासी ही लोगों को ब्रह्मचर्य अपरिग्रह का मार्ग बता सकता है। भगवान महावीर ने कभी मूर्ति की आराधना नहीं की अपितु वे बता सकता है। भगवान महावीर ने कभी मूर्ति की आराधना नहीं की अपितु वे स्वयं व्रतों के ही प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने व्रतों का पालन करते हुए अपनी आत्मा का कल्याण किया। उनके मार्ग पर जो चलता है उसका आत्मकल्याण तो होता ही है उससे समाज कल्याण भी होता है।

599 ई. पूर्व (442 विक्रम पूर्व) महाराज सिद्धार्थ और रानी त्रिशला की कुक्षि से क्षत्रिय कुंडपुर ग्राम (बिहार) में भगवान महावीर का जन्म हुआ। जिन महान पुरुष के छह गुण होते हैं भगवान की उपाधि उन्हीं पर शोभायमान होती है। भगवान महावीर में निम्नलिखित छह गुण थे। 'भग' शब्द की व्याख्या करते हुए एक आचार्य लिखते हैं-

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसश्रियः।
ज्ञान-वैराग्ययोश्चापि, षण्णां भग इतीङ् गना।।

अर्थात्-संपूर्ण ऐश्वर्य, रूप, यश, कीर्ति, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छह संपदाओं के समुदाय को 'भग' कहते हैं। उक्त संपदाओं से जो युक्त है उसे भगवान कहते हैं। महावीर पूर्ण ऐश्वर्यशाली, रूपवान, यशस्वी, कीर्तिमान, श्री ज्ञान व वैराग्य संपदा से संपन्न थे इसलिए भगवान विशेषण उन पर सार्थक प्रतीत होता है।

जब भगवान महावीर माता के गर्भ में थे उस समय इनका नाम वर्धमान पड़ा क्योंकि उस समय राज्य की सुख संपत्ति बढ़ने लगी तथा सभी प्रकार का दुःख घटने लगा। यह किसी शुभ आत्मा के जन्म पाने का संकेत था। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति वैभव के विकास के कारण इनका नाम विज्ञ महापुरुषों ने वर्धमान रखा। लोगस्स पाठ में भी भगवान महावीर को वड्ढमान ही कहा गया है यथा-

कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुनि सुव्वयं नमि जिणं च।
वंदामि रिट्ठ नेमिं पासं तह वडढमाणं च।। (आवश्यक सूत्र)

अर्थात् मैं कुंथुनाथ, अरनाथ, मल्लिनाथ सुव्रतनाथ, नमिनाथ, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ तथा वर्धमान की वंदना करता हूं। जन्म के पश्चात् जब भगवान महावीर ने अपने अद्भुत पराक्रम से खेलकूद में तथा अध्ययन, स्वाध्याय और शक्ति में अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित किया तब इनका नाम महावीर सार्थक हो गया और इनका सर्वप्रिय, सर्वजन कल्याणकारी नाम भगवान महावीर पड़ा। इनकी अवधान शक्ति को देखकर कलाचार्य ने कहा था कि महावीर को अब लौकिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।

भगवान महावीर का परम ज्ञान : जैन धर्म में पांच प्रकार के ज्ञान माने गए हैं-1. मति. 2. श्रुत, 3. अवधि, 4. मनः पर्यव और 5. केवल। भगवान महावीर जब माता के गर्भ में थे तभी से वे अवधि ज्ञान के धारणी थे। मति और श्रुत ज्ञान परोक्ष ज्ञान हैं जबकि अवधि, मनःपर्यव और केवलज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान हैं। मति और श्रुत ज्ञान की सीमा लौकिक ज्ञानतक ही सीमित है जबकि अवधि आदि ज्ञान पारमार्थिक ज्ञान हैं। सामान्यतः प्रबुद्ध जन भी मति और श्रुत ज्ञान तक ही सीमित रह जाते हैं। मतिज्ञान बुद्धि के प्रयोग से तथा श्रुत ज्ञान शास्त्रों के चिंतन, मनन और स्वाध्याय से उत्पन्न होता है। महावीर ज्ञान की इन कोटियों से ऊपर थे इसीलिए उन्हें कलाचार्य ने यह कहकर नहीं पढ़ाया कि महावीर का ज्ञान मतिज्ञान और श्रुतज्ञान से ऊपर का ज्ञान है अर्थात् वे पारमार्थिक ज्ञान के धारणी है। महावीर केवल ज्ञान के अभ्यासी ही नहीं अपितु वे उसके अधिकारी थे। उन्होंने बारह वर्ष की कठिन साधना के बाद कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया।

राजकार्य में अवदान : भगवान महावीर ने बड़े भाई नंदिवर्धन के अनुरोध पर पिता सिद्धार्थ के देहावसान के पश्चात् राजकार्य में भी निपुणता, कुशलता पूर्वक भाई का हाथ बंटाया, किन्तु उनका मन

राजकार्य में न लगकर वैराग्य में ही रहता था। उसका कारण उनका परम ज्ञान है। उनके गृहत्याग की भावना को जानकर अग्रज नंदीवर्धन दुःखी हुए किन्तु उनके अनुरोध से भगवान महावीर 30 वर्ष की आयु तक राजकार्य में संलग्न रहे। महावीर जैसी निर्मल आत्मा का जीवन मात्र राजकार्य तक सीमित नहीं रह सकता। ऐसे महापुरुष सत्य को खोजते हैं। मनुष्यता को मिथ्यात्व की चंगुल से मुक्त कराते हैं चाहे नारी हो या पुरुष वह मुक्त हो सके, यह उनके जीवन का उद्देश्य था। उन्होंने सबमें ऐसा विश्वास जगाया कि सब अपनी आत्मा का विकास कर सकते हैं, साक्षात्कार कर सकते हैं और दिव्य गुण धारण कर सकते हैं। जो राज्य पर राज करता है उसे राजा कहते हैं किन्तु जो आत्मा पर राज्य करता है उसे महाराज कहते हैं। गृहस्थ के रूप में मानवता की वह सेवा नहीं की जा सकती जो भगवान महावीर ने गृहत्याग करके किया। 30 वर्ष के बाद का समय भगवान महावीर के महाराज, योगिराज, धर्मराज, अर्हत, केवली बनने का समय है।

श्रमण के रूप में अवदान : भगवान महावीर ने 30 वर्ष की अवस्था में गृह का त्याग कर महाभिनिष्क्रमण किया। भगवान महावीर से पूर्व 23वें तीर्थंकर श्रमण भगवान पार्श्वनाथ का धर्म शासन विद्यमान था। भगवान महावीर स्वयं दीक्षित हुए क्योंकि तीर्थंकर भगवान स्वयं दीक्षा लेते हैं, वे किसी पूर्व स्थित संघ में दीक्षित नहीं होते अपितु अपने ही संघ का निर्माण करते हैं। गृहत्याग के पश्चात् वे केवल ज्ञान की प्राप्ति में लग गए। बारह वर्ष की तपस्या के दौरान जो कष्ट भगवान महावीर ने सहे हैं साधारण मनुष्य उन कष्टों की कल्पना मात्र से ही जीवन त्याग सकता है। भगवान महावीर जैसे महापुरुषों से यही शिक्षा मिलती है कि जब साध्य सामने हो तब साधक साधना के पथ और उसकी कठिनाई में अडिग रहकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ले और साधना के पथ पर वह साधक कभी पीछे मुड़कर नहीं देखे। अपने साधनाकाल के दौरान भगवान महावीर मौन रहे। साधना के महान पथ पर चलते हुए न उनका कोई अपना था न ही पराया था। चाहे वह देवालय हो चाहे श्मशान, जहां महावीर के रूकने रहने का कोई एतराज नहीं करता भगवान महावीर वहीं रुकते रहते थे। भगवान महावीर शरीर की रुप सज्जा नहीं करते। वे किसी पात्र में नहीं बल्कि हाथ में भोजन करते थे। वे गृहस्थ लोगों से तटस्थ भाव से मिलते थे। उन्होंने अपने जीवन में दस प्रकार के धर्मों का बड़ी संजीदगी से प्रयोग करते थे। धर्म के दस लक्षण इस प्रकार है-क्षमा-मार्दव-आर्जव-सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग-आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य।

साधना के प्रथम वर्ष में ही शूलपाणि नाम के यक्ष ने भगवान महावीर को प्राणघातक कष्ट दिए। क्षमा आदि धर्मों से अलंकृत भगवान महावीर ने हर कष्ट का सामना समता और शांति से किया। शूलपाणि यक्ष परास्त हो गया भगवान जीत गए किन्तु सारी रात कष्ट का सामना समता के साथ करने के कारण थकान वश 48मिनट की निद्रा में भगवान ने दस स्वप्न देखें जिसमें यह प्रकट हआ कि केवली बनने के बाद धर्म-संघ किन-किन सिद्धियों को प्राप्त करेगा। कहने का तात्पर्य ये हैं कि प्रस्तुत स्वप्न स्वप्न नहीं हैं किन्तु ये महावीर की महाविजय का संकेत हैं। महावीर पराक्रम के प्रतीक है। महावीर के गृहत्याग का उद्देश्य बहुत बड़ा था। उन्होंने कभी भी किसी को दुःख नहीं दिया। वे सबका दुःख हरते रहे। उन्होंने दया धर्म की स्थापना की। दया धर्म पर जितना बल भगवान महावीर ने दिया है वह अन्य धर्मों में दुर्लभ है। यद्यपि यज्ञ वैदिक परम्परा में विशुद्ध धार्मिक कार्य माना जाता है किन्तु महावीर के समय यज्ञ का जो वीभत्स रूप देखने को मिलता है उसका परिचय उत्तराध्ययन सूत्र की एक गाथा से मिलता है।

पसुबन्धा सव्ववेया, जटठं च पावकम्मुणा।

न तं तायन्ति दुस्सीलं, कम्माणि बलवन्ति हि। (उत्तराध्ययन, 25/30)

अर्थात् जयघोस मुनि अपने ब्राह्मण भाई विजयघोस से कहते हैं कि पशु वध और बंधन के लिए किए

जाने वाले यज्ञ पाप कर्म का कारण बन जाते हैं। जैन धर्म में यज्ञ का अर्थ ऐसा कर्म है जो मनुष्य को मुक्ति दिला सके। हरिकेशी मुनि ने भगवान महावीर के कर्मयज्ञ की व्याख्या इस प्रकार की है-छहकाय जीवों का समारंभ न करते हुए असत्य और चोरी का सेवन न करते हुए तथा परिग्रह, स्त्री, मान और माया इन सबका भलीभांति त्याग करके इन्द्रियों का दमन करते हुए विचरा जाय अर्थात् इस प्रकार का आचरण किया जाए। (उ.अ. 12/41) जो पांच संवरों से संवृत हैं, जो इस जन्म में संयम रहित जीवन की इच्छा न रखने वाले और परीषहों को सहन करने वाले हैं जिन्होंने शरीर के ममत्व को त्याग दिया है वे ही पवित्र हैं और वे ही जीव कर्मों पर विजय प्राप्त करने वाले श्रेष्ठ यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं। भगवान महावीर उन सभी धार्मिक अनुष्ठानों से सावधान रहने का संदेश देते हैं जिसमें अहिंसा, संयम और तप का अभाव हो।

उन्होंने साधना के समय जो स्वप्न देखे थे उनका परिणाम यह हुआ कि भगवान महावीर ने मोहनीय कर्म का नाश कर दिया। उनका शुक्ल ध्यान लगा। आगमों का सृजन हुआ। अणुव्रत और महाव्रत धर्म का प्रचार हुआ। श्रमण संघ बना। धर्म परिषद् में देवताओं की उपस्थिति हुई। मोक्ष प्राप्त किया। केवल ज्ञान प्राप्त किया। उनका यश तीनों लोकों में फैला तथा सच्चाई की जीत हुई और बुराई की हार हुई अर्थात् मिथ्यात्व टूटा।

बड़े-बड़े यक्ष राक्षसों ने चाहे वह चंडकौशिक हो, चाहे संगमदेव हो, चाहे कटपूतना या फिर ग्वाला सबके क्रोध का उत्तर भगवान महावीर ने शांति से दिया तथा कष्ट देने वालों के जीवन का उद्धार किया, उन्हें क्षमा दान दिया।

तत्वज्ञान का अवदान : भगवान महावीर ने मानवता को जीव, अजीव, आस्रव, पुण्य, पाप, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्व का ज्ञान दिया। जीव संसार का प्रमुख तत्व है। उसी का बंधन होता है और उसी की मुक्ति। यद्यपि संसार दुःखमय है तथापि सम्यक्त्व मार्ग पर चलकर चिर स्थायी सुख प्राप्त किया जा सकता है। भगवान महावीर ने मनुष्य के सोये हुए पुरुषार्थ को जगाया है और उसे यह बताया है कि सुन्दर भाग्य का निर्माण स्वयं के सम्यक कर्म से होता है। केवली भगवान पूर्णज्ञानी होते हैं। महावीर के जीवन से अज्ञान रूपी अंधेरा दूर हो गया था इसलिए उनका न किसी से राग था न ही किसी से द्वेष। वे समता के धरातल पर प्रतिष्ठित हो गए थे। भगवान महावीर विधूतअष्टकर्मकल्मष (अर्थात् धो दिया है जिसने आठ प्रकार के कर्मों का मैल) थे। आठ प्रकार के कर्मों का मैल आत्मा के आठ प्रकार के गुणों पर चढ़ जाता है। जिन कर्मों से आत्मा के ज्ञान, दर्शन, चरित्र और वीर्य इन चार गुणों की हानि होती है उन्हें क्रमशः ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और वेदनीय कर्म कहते हैं। जिन कर्मों से आयु, नाम, गोत्र और कार्यसिद्धि की हानि होती है उसे क्रमशः आयुष्य, नाम, गोत्र और अन्तराय कर्म कहते हैं। पहले चार कर्मावरण घन घातीय कर्मावरण हैं। बाद के चार कर्मावरण अघातीय कर्मावरण हैं। भगवान महावीर ने वीतराग बन कर अपने कर्मों की निर्जरा की। उन्होंने सयोगी केवली के रूप में 30 वर्ष तक स्व पर कल्याण किया और 72 साल की आयु में अयोगीकेवली के रूप में निर्वाण प्राप्त कर लिया। जिन्होंने उनको कष्ट दिया था, उनके प्रति महावीर के मन में कोई द्वेष भाव नहीं आया क्योंकि महावीर के जीवन में एक ही उद्देश्य था वह था सिद्ध, बुद्ध और मुक्त होना। यदि वे राग और द्वेष में पड़ते तो सिद्धत्व, बुद्धत्व और मुक्ति के मार्ग से भटक जाते। उनके आत्मा का वह विकास नहीं होता जो कि उन्होंने साधना द्वारा प्राप्त किया। इस प्रकार वह जन कल्याण के मार्ग से भी भटक जाते। भगवान महावीर ने स्वकल्याण और परकल्याण का जो मार्गखोला है। आज मानवता को उस मार्ग पर चलकर आत्म कल्याण करने की जरूरत है।

केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात के अवदान : भगवान महावीर को 42 वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला दशमी को रिजुवालिका नदी के किनारे केवल ज्ञान अर्थात् परम ज्ञान प्राप्त हो गया। भगवान महावीर का मौन टूट

गया और उनकी संसार कल्याणकारी वाणी जन कल्याणकारी सुरसरिता गंगा की भांति प्रवाहमान हो उठी। दशवैकालिक सूत्र की यह गाथा मूर्तिमान हो गई।

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवाभि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो।। (दशवैकालिक 1/1)

अहिंसा, संयम और तप ये मंगल मुक्ति के साधन हैं। यह कल्याणकारी धर्म है। इस धर्म में जिसका मन रम जाता है देवता भी उसे सदा नमस्कार करते हैं।

भगवान महावीर का जीवन केवल ज्ञान से पूर्व भी व पश्चात् भी जन-जन कल्याणकारी था। मौन रहकर भी जनकल्याण किया। केवल ज्ञान आत्मा का पूर्ण प्रकाश है। उन्होंने नारी जाति का उद्धार, दास प्रथा के उन्मूलन का कार्य तथा जाति प्रथा का समाधान किया और सर्वोदय तीर्थ की स्थापना की।

नारी उत्थान : चंदनबाला नाम की एक राज कन्या जो उस समय एक श्रेष्ठी के घर में बंदी बनी हुई थी, उसके हाथों से भिक्षा लेकर उसे दासता से भगवान महावीर ने मुक्ति दिलवाया था। यही नहीं भगवान ने उस कन्या को संघ में साध्वी दीक्षा दी तथा साध्वियों की प्रमुखा भी बनाया। जैन संघ में भगवान महावीर की आज्ञा से साध्वी वर्ग के लिए स्थान सदैव खुला रहा है। जैन धर्म नारी जाति के सम्मान का प्रतीक है। भगवान महावीर के समय ही जैन संघ में 36000 साध्वी जी का प्रवेश हो चुका था। यदि भगवान महावीर के जीवन में नारी जाति की प्रबल आस्था नहीं होती तो इतनी संख्या में नारियां दीक्षित हो कर के अपने आत्मा का उद्धार नहीं करती। जब तक साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका धर्म वेदी के चार पाए निर्मित नहीं होते हैं तब तक धर्मतीर्थ का निर्माण नहीं होता। आज भी भगवान महावीर के ही धर्मशासन में जैन धर्म चल रहा है। जैन धर्म के आचार्य नारी जाति के उद्धार के लिए भगवान महावीर की वाणी का अनुसरण करते हुए नारी सम्मान की रक्षा करने में तत्पर रहते हैं।

अहिंसा और विश्वशांति में अवदान : भगवान महावीर ने कहा जियो और जीने दो। यह आज के संदर्भ में उनका यह एक बहुत बड़ा संदेश है। 'परस्परोग्रहो जीवानाम्' अर्थात् एक जीव का दूसरे जीवन पर उपकार है। एक जीव दूसरे जीव के जीवन का सहारा है। हे मनुष्य! तुम अपनी आत्मा के कल्याण के लिए मनुष्यों पर ही नहीं पशुओं पर भी दया करो। दया दैवी गुण है। ईसाई धर्म भी कहता है (Forgivness in Divine) अहिंसा धर्म का पालन करो। अहिंसा सव्वभूय खेमंकरी है अर्थात् अहिंसा सभी प्राणियों का कल्याण करने वाली है। प्रश्न व्याकरण सूत्र में भगवान महावीर ने अहिंस, सत्य, अस्तेय और ब्रह्मचर्य पर व्यापक और गंभीर संदेश दिया है जो मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक है। भगवान महावीर ने कहा है-

एस खलु गंथे, एस खलु मोहे,
एस खलु मारे, एस खलु णरए।। (आचारांग 1/1/2)

यह आरम्भ (हिंसा) ही वस्तुतः ग्रंथ-बंधन है, यही मोह है, यही मार-मृत्यु है, और यही नरक है। धर्म अहिंसा में है दया में है। ऐसा प्रतीत होता है गोस्वामी तुलसीदास जी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं-परम धर्म श्रुति विदित अहिंसा। पर निंदा सम अघ न गरीसा। (रामचरितमानस उत्तराकांड दोहा-120-21 के मध्य)

अहिंसा परम धर्म है, पर निंदा सबसे बड़ा पाप है। आत्म कल्याण और पर कल्याण के साधक की साधना का पहला सोपान अहिंसा है। ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी भगवान महावीर की ही बात कह रहे हों-

अघ कि पिसुनता सम कछु आना। धर्म कि दया सरिस हरिजाना (रामचरितमानस उत्तराकांड दोहा-111-12 के मध्य)

दया के समान कोई दूसरा धर्म नहीं है। गुरुवाणी भी कहती है कि-धौलु धरमु दया को पूतु, संतोषु थापि रखिया जिनि सूतु। (गुरु ग्रंथ साहिब, पन्ना-2) धर्म दया से जन्मता है और संतोष से सुरक्षित रहता है। भगवान महावीर ने समता, अहिंसा, दया, धर्म को अपने जीवन में साकार किया और उसे जीकर सभी मनुष्यों को धर्म का मार्ग दिखाया। विश्व शांति का मार्ग बताने के लिए उन्होंने ज्ञान और तप का मार्ग अपनाया। उन्होंने बताया कि शांति और सुख को अपनाने के लिए मनुष्य को बंधन के कारण अर्थात् आस्रव (राग-द्वेष) पर रोक (संवर) करना होगा। यम-नियम-संयम से आत्मा के मूल गुणों का विकास करना होता है। भगवान महावीर के अहिंसा और शांति के संदेश में लोकिक और अलौकिक दोनों प्रकार की उन्नति के सूत्र छिपे हैं।

जातिवाद का खंडन : भगवान महावीर ने जातिवाद का खंडन किया है। उन्होंने कर्मवाद की स्थापना की है। उन्होंने यह भी कहा कि मनुष्य का भाग्य भी कर्म से ही बनता है। उत्तराध्ययन सूत्र में गाथा है-

कम्मुणा बम्हणो होई वैस्सो होई कम्मुणा।
कम्मुणा खत्तियो होई सुद्दो होई कम्मुणा।।

कोई भी व्यक्ति कर्म से ब्राह्मण होता है। कर्म से क्षत्रिय होता है। कर्म से वैश्य होता है और कर्म से ही शूद्र होता है। भगवान महावीर ने उन सभी लोगों के लिए अध्यात्म का मार्ग दिखा दिया जो जाति से निम्न थे किन्तु तपोबल के आधार पर उन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया था जैसे हरिकेशी मुनि। श्रमण केवल श्रमण है उसका अन्य किसी जाति से संबन्ध नहीं है।

भगवान महावीर ने कहा कि कर्म करते हुए भी पाप कर्म से बचा जा सकता है-

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयं मासे जयं सये।
जयं भुंजन्तो भासन्तो, पावकम्मं न बंधई।। (दशवैकालिक 4/8)

यत्नपूर्वक (अप्रमाद भाव से) चलते हुए, यत्नपूर्वक खड़े हुए, यत्नपूर्वक बैठते हुए, यत्नपूर्वक सोते हुए, यत्नपूर्वक खाते हुए, बोलते हुए पाप कर्म का बंधन नहीं होता है। यत्नपूर्वक, अप्रमादभाव या मूर्च्छारहित होना एक ही भाव को दर्शाता है जिसका अर्थ है रागद्वेष से ऊपर उठना। श्रमण निश्चय में विश्वास रखता है और व्यवहार नय में भी विश्वास रखता है। व्यक्ति चाहे किसी भी जाति धर्म का क्यों न हो अप्रमादभाव सबके जीवन को उन्नत बनाने वाला है। जैन धर्म में धर्मतीर्थ के चार पाए हैं जातियां कर्म पर आधारित हैं। धर्म तीर्थ के इन पावों का संबंध व्रतों से है। भगवान महावीर ने व्रती होने के लिए किसी खास जाति को अधिक महत्व नहीं दिया है।

अणुव्रत और महाव्रत का अवदान : अणुव्रती और महाव्रती धर्म तीर्थ के दो सिरे हैं। श्रावक और श्राविकाएं अणुव्रती की श्रेणी में आते हैं तथा श्रमण और श्रमणी महाव्रती की श्रेणी में आते हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इन पांच व्रतों का एक सीमा तक पालन करने वाले अणुव्रती की श्रेणी में आते हैं जबकि इन्हीं पांच व्रतों का असीमित तौर तक पालन करने वाले महाव्रती की श्रेणी में आते हैं। भगवान महावीर ने अणुव्रत और महाव्रत दो व्रतों का प्रवर्त्तन किया है यह उनका एक नया अवदान है। आज आवश्यकता है कि लोग इस संसार को माया मिथ्या न कहकर अणुव्रती बनकर आत्म और पर का कल्याण करें। भगवान महावीर ने कहीं ऐकान्तिक दृष्टिकोण की बात नहीं कि अपितु उन्होंने अनैकान्तिक दृष्टि से अणुव्रत और महाव्रत दिखाकर श्रावक-श्राविकाओं तथा साधु-साध्वियों सबके आत्म कल्याण का मार्ग खोला।

सर्वोदय तीर्थ : भगवान महावीर के सर्वोदय तीर्थ ने अहिंसा अनेकांत और अपरिग्रह के रूप में पल्लवित हो मन-वाणी और तन को सुखमय बनाने का लक्ष्य प्राप्त किया। स्वामी समन्तभद्र ने

युक्तयानुशासन में कहा है-

सर्वान्तवत्तद् गुणमुख्यकल्पं, सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षं।
सर्वापदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।।

अहिंसा से आत्मा का कल्याण करो। अनेकांत से संसार को समझो और व्यवहार करो। अपरिग्रह से समाज व्यवस्था चलाओ।

अहिंसादि पांच व्रत योग दर्शन में पांच यम के तथा बौद्ध दर्शन में पंचशील के रूप में सर्वमान्य हैं। अपरिग्रह पांचवां व्रत है। अहिंसादि व्रतों का पालन हमारा आचार पक्ष है तथा अनेकांतवाद विचार पक्ष है। भगवान महावीर का धर्म सर्वोदय तीर्थ है सर्वोदय का अर्थ ही है कि सभी का विकास। भगवान ने आचार और विचार दोनों को महत्त्व दिया है। अहिंसा सभी जीवों के लिए कल्याणकारी है। (प्रश्नव्याकरण 2/1) सत्य को तो भगवान का ही दूसरा दर्जा दिया गया है यथा-तं सच्चं भगवं (प्रश्नव्याकरण 2/2)। दूसरे की किसी वस्तु को आज्ञा लेकर ही ग्रहण करना चाहिए-अणुन्नविय गेण्हियव्वं (प्रश्नव्याकरण 2/3) ब्रह्मचर्य-उत्तम तप, नियम, ज्ञान, दर्शन, चरित्र, सम्यकत्व और विनय का मूल है (प्रश्नव्याकरण 2/4)। जो समस्त प्राणियों के प्रति समभाव रखता हो वस्तुतः वही श्रमण है यथा-समे य जे सव्वपाण भूतेसु से हु समणे। (प्रश्नव्याकरण 2/5) जो भोगोपभोग की सीमा निर्धारित करे वह श्रमण है। मूर्च्छा प्रमाद का पर्यायवाची है। मूर्च्छा को परिग्रह भी कहा गया है। मूर्च्छा का अर्थ राग-द्वेष है। यही आस्रव है। यही मनुष्य के जीवन में सबसे बाधक तत्व है। भगवान महावीर ने चारित्र की इतनी सरल एवं सर्वजन कल्याणकारी औषधि दी जिसका सेवन करते हर जाति, हर वर्ग और धर्म का व्यक्ति अपना, अपने परिवार का और अपने समाज का हित कर सकता है।

अनेकांत का अवदान : एक ही वस्तु में अनेक विरोधी धर्म अविरोध के साथ रहते हैं। अनेकान्त का विचार विरोधी धर्मों के सहअस्तित्व का विचार है। अनेक विरोधीगुण एक ही वस्तु में साथ-साथ रहते हुए निर्माण कार्य में सहायक है। भगवान महावीर के अनुसार ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि अवगुण यह सब हमारे अज्ञान के कारण उपजते हैं जिससे हम ईर्ष्या करते हैं वह हमारे निर्माण में भी सहयोगी हैं जब हमें ऐसा ज्ञान हो जाता है तब हम ईर्ष्या करना बंद कर देते हैं। भगवान ने इसीलिए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक चरित्र को जीवन का त्रिरत्न बतलाया है। अनेकान्त के विचार के बिना हमारा तत्व ज्ञान अधूरा है। जल और अग्नि विरोधी महाभूत हैं किन्तु दोनों एक साथ रहते हैं। जब बादल से बादल टकराते हैं तब बिजली चमक उठती है। बादल जल है और बिजली आग है। भगवान महावीर के अनुसार मानव धर्म वह है जिसमें सबका अभ्युदय (विकास) हो सबका निःश्रेयस (कल्याण) हो। भगवान महावीर ने स्पष्ट कहा जो व्रतों का पालन करेगा अनेकान्त के मार्ग को अपनाएगा वह चाहे जिस किसी भी जाति, वर्ग, धर्म का व्यक्ति क्यों न हो वह अपना तथा दूसरे का कल्याण करने में सफल होगा।

अनेकान्तवाद वस्तु तत्व को स्वयं समझने की प्रक्रिया है। जब इसी सिद्धांत को शब्दों के माध्यम से दूसरे को समझाते हैं तो स्याद्वाद की शैली का सहारा लिया जाता है। जब वस्तु तत्व के एक अंश को एक दृष्टि से समझते हैं तो उसे नयवाद कहा जाता है। आगमों में भगवान महावीर के सिद्धांतों को अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और नयवाद की दृष्टि से ही प्रस्तुत किया गया है।

भगवान महावीर के तीर्थंकरत्व में श्रमणसंघ का जो स्वरूप सम्मुख आया, उसे जैन श्रमण संघ के रूप में प्रसिद्धि मिली। महात्मा बुद्ध ने जिस धर्म का प्रवर्त्तन किया उसे बौद्ध धर्म के नाम से जाना गया। उन्होंने जीवन में मध्यम मार्ग अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। भगवान महावीर ने तप के माध्यम से केवलज्ञान प्राप्त किया। वे महान तपस्वी के रूप में विख्यात हुए। भगवान महावीर तथा भगवान बुद्ध के

श्रमण धर्म को क्रमशः जैन धर्म और बौद्ध धर्म के नाम से प्रसिद्धि मिली।

जैन धर्म में भगवान महावीर ने साध्वी वर्ग को संघ का हिस्सा बनने की अनुमति अपने समय से दे दी थी। यही कारण था कि जैन धर्म में शिथिलाचार का कोई स्थान नहीं रहा। भगवान महावीर के धर्म का प्रताप है कि आज भी जैन श्रमण संघ में साध्वियों की संख्या साधुओं की अपेक्षा अधिक है।

भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हमें नारी उत्थान के प्रति सजग और उनके सम्मान के लिए तत्पर रहना चाहिए। हमें अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए सत्य की रक्षा करनी चाहिए। हमें उन्नत चरित्र वाला और अपरिग्रही व्यक्ति बनना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक, प्रेरणा स्रोत और लेखक : सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र पुस्तक भगवान महावीर के जीवन की विस्तृत झांकी प्रस्तुत करती है। संथारा साधिका, महासाध्वी, परम विदुषी श्री स्वर्णकांता जी महाराज लेखकद्वय के लेखन की सदा प्रेरणास्रोत रही हैं। महाश्रमणी, शासनज्योति, समाज सुधारिका श्री सुधा जी महाराज के जन्म दिवस को मनाते हुए सन् 2006 में ग्रंथ की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित हुई थी। इस वर्ष समाज सुधारिका साध्वी सुधा जी महाराज का 50वीं दीक्षा जयंती, डा. साध्वी स्मृति जी महाराज की 25वीं दीक्षा की सुखद जयंती के महान अवसर पर भक्त लेखकों के मन में यह हौसला जागा है कि प्रस्तुत पुस्तक का तृतीय संस्करण का पुष्प महाश्रमणी, शासन ज्योति, समाज सुधारिका श्री सुधा जी महाराज एवं डा. साध्वी स्मृति जी महाराज के कर कमलों में भेंट किया जाए। भगवान महावीर के पावन चरणों ने पंजाब की धरती को राजा उदयन को भागवती दीक्षा देने के लिए पवित्र किया था। पंजाब की धरती को वह मधुर स्मृति है और उसी स्मृति की स्मृति साध्वी सुधा जी महाराज अपनी अमृतमयी उपस्थिति से साध्वी स्मृति जी जैसी सुविधा से समलंकृत होकर कर रही हैं। विद्या और विद्वान का जो सम्मान इनके हृदय में विद्यमान है, वह बेजोड़ है। आपके मंगलमय सान्निध्य में 26वीं महावीर जयंती द्वारा मुझे अंतर्राष्ट्रीय जैन साध्वी पार्वती अवार्ड सन् 2009 में दिया गया था। यह आपके द्वारा विद्वानों के सम्मान का परिचायक है। इस मंगलकारी अवसर पर हम चिर आयुष्य और आरोग्य की कामना करते हैं।

इस पावन अवसर पर श्रमणोपासक स्मृतिशेष श्री पुरुषोत्तम जैन, श्री रवीन्द्र जैन जी के महनीय यत्नों से प्रकाशित सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र पुस्तक का चतुर्थ संस्करण गुरुणी जी के कर कमलों द्वारा अनावृत्त होकर पाठकों के कर कमलों में आ रहा है। यह पुस्तक एक गवेषणापूर्ण कृति है। यह भगवान महावीर के जीवन की घटनाओं को आगम के तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करती है।

अध्यात्म जगत में सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र पुस्तक अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी, इसी भावना के साथ।

-डा. प्रद्युम्न शाह सिंह,
एसोसिएट प्रोफेसर, जैन धर्म,
धर्म अध्ययन विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला-147002

प्रेरिका की कलम से

पाठकों को याद हो प्रभु महावीर का 2500वां निर्वाण उत्सव उपप्रवर्तिनी गुरुणी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रेरणा से मनाया गया था। तब प्रभु महावीर का निर्वाण मनाने जैनों के चारों सम्प्रदाओं की समिति बनी। इसी समिति ने सारे जन कल्याण के कार्य कर दिए। परन्तु पूज्य गुरुवर्या को जैन समाज की एक कमी खटकती रही वह थी कि जैनों का साहित्य हर स्थानीय भाषा में था पर पंजाबी में न था। गुरुणी जी ने इस कार्य के लिए श्री पुरुषोत्तम जैन व श्री रवीन्द्र जैन, मालेर कोटला को तैयार किया। दोनों ने सारा काम संभाला। पहले सरकारी स्तर की समिति बनी। जैन समारोह किए। रोड, नगर का नामकरण प्रभु महावीर के नाम पर रखे। पहली बार चारों सम्प्रदाय एक झण्डे एक निशाने के तले इकट्ठे हुए। फिर हमने एक साहित्य समिति का गठन भी किया, जो पंजाबी, हिन्दी भाषा में, जैन समूह के लिए साहित्य तैयार करे। पहले पंजाब में जैन साहित्य उर्दू भाषा में प्राप्त था। गांवों में गुरुमुखी पढ़ाई जाती थी, जो आज पंजाबी भाषा की लिपि है।

मैंने गुरुणी जी के आशीर्वाद से अपने निर्देशन में इन दोनों को जरूरी काम दिया। इसमें आगम अनुवाद, जैन कहानी लेखन, मूल पुस्तकों के रूप में 50 ग्रन्थ छप चुके हैं। हिन्दी में अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है। इसी निर्वाण शताब्दी पर पंजाबी विश्वविद्यालय में जैन चेयर की स्थापना हुई। कालेज, स्कूल, धर्मशाला, पुस्तकालय, अस्पताल की स्थापना हुई। भाषणमाला का आयोजन हुआ। गुरुणी जी का सन्देश यूनिवर्सिटी से राष्ट्रपति तक पहुंचा। जैन विद्वानों को भाषण के लिए आमन्त्रित किया गया, सन्मान किया गया। यह कार्य लगातार चालू है। अब भगवान महावीर का 2600 साला जन्म आ रहा है हमें उसे धर्म प्रचार द्वारा मनाना है।

गुरुणी जी की काफी समय से इच्छा थी कि प्रभु महावीर का सरल सचित्र जीवन शास्त्र पर आधारित हो। मैंने गुरुणी जी की इच्छा को समझा। मैंने रवीन्द्र जैन, मालेर कोटला और पुरुषोत्तम जैन को शास्त्रों में से हिन्ट दिए। फिर प्रकाशित 27 ग्रन्थों की सूची तैयार की। इन दोनों ने स्वयं भी लाइब्रेरियों से उपलब्ध महावीर चरित्र पढ़े।

आधारभूत ग्रन्थ महावीरः एक अनुशीलन लेखक आचार्य देवेन्द्र मुनि व मुनि श्री कल्याणविजय कृत श्रमण महावीर ग्रन्थ को चुना गया। हम इन दोनों लेखकों व ग्रन्थ प्रकाशकों के अभारी हैं। इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि जो श्री श्रीचन्द जी सुराना ने मेहनत से पढ़ा और संशोधन किया। उनके सुपुत्र श्री राजेश सुराना ने प्रकाशन में प्रमुख सहयोग दिया। श्री रवीन्द्र जैन व श्री पुरुषोत्तम जैन के साथ सुराना परिवार हमारे साधुवाद का पात्र है। शास्त्र चर्चा का आधार मुनि श्री कल्याणगन विजय कृत क्रामण महावीर हैं।

परम पूज्य उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के शिष्यरत्न उपप्रवर्तक वाणीभूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने भी कृपाकर कल्पसूत्र के रंगीन चित्रों से भगवान महावीर के जीवन से सम्बन्धित चित्र लेने की स्वीकृति प्रदान की। उनके प्रति आभार प्रकट करने के लिए शब्द मिलना असंभव है।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि अभी इस समिति ने प्रकाशन का काम हाथ में लिया है। साथ में साध्वी स्वर्णकाता जैन पुस्तकालय की स्थापना का कार्य शुरू किया है। अभी तक 50 छोटी पुस्तकें छप चुकी हैं। भविष्य में अन्य पंजाबी अप्रकाशित जैन साहित्य छपवाने का इरादा है।

मुझे ज्ञात हुआ है कि इस ग्रंथ का चतुर्थ संस्करण 2552वें भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक व गुरणी जी के दीक्षा जयंती के अवसर पर होने जा रहा है। मैं लेखक द्वय को उनकी भावनाओं व पावन कार्य के लिए आशीर्वाद देती हूं।

- साध्वी सुधा

सम्पादकीय

दर्शन बुद्धि का विषय है, ज्ञान आत्मा का विषय है।

दर्शन चिन्तन की गहराई में उतरता है, जीव और जगत् की पहेलियां सुलझाता है, जबकि ज्ञान जीवन से मुखरित होकर चरित्र बनता है और जीवन की श्रेष्ठता तथा पवित्रता के शिखर पर पहुंचता है।

भगवान महावीर केवल एक महान दार्शनिक ही नही थे, वे गहरे ज्ञानी-आत्मज्ञानी थे। उनका ज्ञान जीवन के प्रत्येक कोण को स्पर्श करने वाला, उसका परिष्कार करने वाला है और जीवन को पारदर्शिता प्रदान करने वाला था।

उन्होंने जो कुछ कहा, प्रतिपादन किया, वह केवल चिन्तन का परिणाम नहीं था, किन्तु जीवन का जिया हुआ गहरा अखण्ड सत्य था। उसमें जीवंतता थी, प्राणवत्ता थी और एक प्रखर तेजस्विता थी। दूसरों की अनुभूति को आत्मसात् करके स्वयं की अनुभूति बनाई थी और वही अनुभूति अभिव्यक्ति बनी। इसलिए उनकी वाणी में दीर्घकालीन साधना का अनुभव मुखरित था। जीव-मात्र की भावनाओं, संवेदनाओं और जीजिविषाओं का स्पन्दन था उसमें, इसलिए वह जीव मात्र के कल्याण और सुख-शान्ति का निमित्त बनी।

मेरी पूज्य गुरुणीवर्या साध्वी रत्न श्री सुधाजी महाराज की बहुत वर्षों से भावना थी कि भगवान महावीर के साधनामय और परोपकार परायण जीवन की घटनाओं का सरल और सहज रूप में लिखकर सभी के लिए प्रस्तुत किया जाए। २५००वीं महावीर निर्वाण शताब्दी वर्ष पर पूज्य महागुरूणी साध्वी रत्न उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज ने भी इस विषय में दो-तीन बार भाई रवीन्द्र जैन व भाई पुरूषोत्तम जैन को प्रेरणा दी और अपनी अन्तर इच्छा आशीर्वाद रूप में व्यक्त की, कि महातपोधनी श्रमण श्रेष्ठ भगवान महावीर का जीवन चरित्र लिखें। पूज्य महागुरूणी जी की भावना को ग्रहण कर प्रेरक शब्दों की प्रेरणा से स्फुरणा प्राप्त कर श्री रवीन्द्र जैन व श्री पुरूषोत्तम जैन ने भगवान महावीर का सम्पूर्ण जीवन वृत्त लिपिबद्ध किया। उन्होंने अनेक ग्रंथों का परिशीलन किया और फिर अपना चिन्तन साथ में जोड़ते हुए उसका लेखन भी किया। पूज्य गुरूणी वर्या की प्रेरणा का ही सुपरिणाम आपके हाथों में है।

प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक हमारे धर्मभ्राता हैं, लगभग ३० वर्षों से जैन साहित्य के सेवा में कार्यरत हैं। गुरूणी की प्रेरणा से भाई पुरूषोत्तम जैन व भाई रविन्द्र जैन ने हिन्दी व पंजाबी भाषा में जैनधर्म पर ५० से ज्यादा ग्रंथ लिखे हैं। पंजाबी भाषा के यह लेखक, अनुवादक, टीकाकार, कथाकार हैं, जिन्होंने जैन भगत को पंजाबी लोगों तक पहुंचाया है। दोनों भ्राताओं ने गुरूणी जी की प्रेरणा से जैन आगमों पर पंजाबी टीकाओं है, जिनमें अधिकतर प्रकाशित हो चुकी हैं।

दोनों ने पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में जैन चेयर, आचार्य श्री आत्माराम जैन भाषण माला व संस्कृत आवार्ड की स्थापना की है। मेरे दोनों भ्राताओं ने १० वर्षों से गुरूणी जी की प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रंथ बड़ी लगन व मेहनत से तैयार किया है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली समझती हूं कि मुझे ऐसे महान ग्रंथ का संपादन करने का अवसर मिला है।

सन् 2001 का वर्ष प्रभु महावीर २६००वें साला जन्म जयन्ती के रूप विश्व भर में मनाया गया। इस अवसर पर समिति ने दो कार्यों को अपने हाथों में लिए- (१) आदिश्वर धाम में साध्वी स्वर्णा जैन पुस्तकालय और (२) प्रस्तुत ग्रंथ सचित्र श्रमण भगवान महावीर चारित्र। गुरूणी जी के आशीर्वाद से दोनों

कार्य सम्पन्न होने के करीब हैं। इसके अतिरिक्त यह अनेकों पंजाबी जैन साहित्य की गतिविधियां जारी हैं। दोनों का भाषा विभाग पंजाब द्वारा सम्पन्न हो चुका है। इससे पहले राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी, इन्हें श्रमणोपासक पद से विभूषित कर चुके हैं। इनकी साहित्यक व सामाजिक गतिविधियां सतत जारी हैं। भविष्य में यह देव, गुरू व धर्मों की भक्ति कर उनके आशीर्वाद प्राप्त करते रहेंगे, यही मेरी शुभकामना है। प्रस्तुत ग्रंथ में उन्होंने कितना श्रम किया है, यह भूमिका से पता लग जाता है। इस ग्रंथ में उन्होंने जैनधर्म के दोनों सम्प्रदायों की मान्यताओं का पूर्ण ध्यान रखा है और कोशिश की गई है, कोई ऐसी बात न लिखी जाए, जिससे किसी परम्परा के विरुद्ध हो।

अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार मैंने जो कुछ संशोधन किया है, वह संतोष और समाधान हेतु ही किया है और इसको सजाने संवारने तथा सुन्दर चित्रों को संयोजित करके एक परिपूर्ण पुस्तक स्वरूप प्रदान करने में भाई राजेश जी सुराना ने भी बहुत श्रम किया है। सबके श्रम का, सबकी सद्‌भावना का यह सफल सचित्र भगवान महावीर का जीवन दर्शन है। इस कार्य को मुझे सौंपने के लिए मेरी गुरुणी ने योग्य समझा, इसके लिए नतमस्तक उनको आभार प्रगट करती हूं।

कल्पसूत्र के अन्तर्गत भगवान महावीर जीवन विषयक चित्र प्राप्त कराने में उपप्रवर्तक वाणी भूषण श्री अमर मुनि जी महाराज ने जो आत्मीय अनुग्रह प्रदान किया है वह मेरे लिए उत्साहवर्धक आशीर्वाद रूप है।

प्रथम संस्करण के रूप में भगवान महावीर की २६००वीं जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर एक विनम्र श्रद्धांजलि उस परम पुरुष के चरणों में अर्पित की गई थी। मुझे विश्वास है, वीतराग देव का यह तपोमय दिव्य जीवन और उनके जन कल्याणकारी उपदेश, अध्यात्म रस भरी तत्व चर्चाएं हमारे अंतःकरण को सदा पवित्रता तथा श्रेष्ठता के पथ पर बढ़ाने में सम्बल बनेगा। संपादन कार्य में अगर कोई त्रुटि रह गई हो तो मैं समस्त श्रीसंघ से क्षमायाचना करती हूं। एक बार मैं पुनः अपनी गुरुणी व इस ग्रंथ की प्रेरिका महाश्रमणी, शासन ज्योति श्री सुधा जी महाराज का आभार प्रकट करती हूं। दोनों धर्म भ्राताओं को इस कार्य के लिए साधुवाद देती हूं कि उनके माध्यम से इस ऐतिहासिक कृति का संपादन करने का मुझे शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

तृतीय संस्करण हमारी गुरुणी प्रवर्त्तिनी श्री सुधा जी महाराज की अर्द्ध शताब्दी के उपलक्ष्य में व मेरी दीक्षा के पच्चीस वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति ने यह प्रकाशन करवाया था।

2552वें भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक व हमारी गुरुणी संथारा साधिका उपप्रवर्तिनी महसाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के पावन दीक्षा दिवस के उपलक्ष पर यह चतुर्थ प्रकाशन हो रहा है। मैं प्रकाशक, लेखक द्वय व समिति को साधुवाद देती हूं। आशा करती हूं कि भविष्य में भी ऐसा सहयोग बना रहेगा।

साध्वी स्मृति
अंबाला शहर।

भूमिका

भारत धर्म-प्रधान देश है। यहां बहुत से धर्मों का जन्म हुआ है। जैन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है। यह धर्म अनादि है, शाश्वत है।

जैनधर्म में तीर्थंकर परम्परा है जिसमें २४ तीर्थंकर भरत क्षेत्र में जन्म लेते हैं। महाविदेह क्षेत्र में यह परम्परा शाश्वत रहती है। इस क्षेत्र में तीर्थंकरों का कभी अभाव नहीं रहता।

भगवान ऋषभदेव प्रथम भिक्षु, प्रथम तपस्वी, माने गए हैं। उन्हें मानव सभ्यता को असि, मसि, कृषि प्रदान की। स्त्रियों को उन्होंने ६४ कलाएं व पुरुषों को ७२ कलाएं सिखाईं। वह मानव सभ्यता, धर्म के आदीश्वर, विश्वकर्मा थे। उन्हीं के पुत्र के नाम से इस आर्यवर्त का नाम भारतवर्ष पड़ा। फिर एक के बाद २२ तीर्थंकरों ने श्रमण (धर्म) संस्कृति का प्रचार किया।

इसी परम्परा के अन्तिम तीर्थंकर थे वर्द्धमान, ज्ञातपुत्र भगवान महावीर। प्रभु महावीर पर लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। पर भक्ति की शक्ति से कुछ भी असम्भव नहीं है। प्रश्न हो सकता है कि हमारे ग्रन्थ में नया क्या है? नया कुछ नहीं है। हमने तो महापुरुषों द्वारा लिखे ग्रन्थों का अनुकरण किया है। स्पष्ट शब्दों में कहें, तो इस ग्रन्थ में हमारा अपना कुछ नहीं, मात्र पूर्व आचार्यों ने जैसे प्रभु महावीर का गुणगान किया है उनका पवित्र चारित्र लिखा है, हमने भी उन भक्तिपूर्ण शब्दों में अपना स्वर मिलाया है। उन्हीं का अनुमोदना किया है। यही अनुमोदन हमारी भक्ति है।

निर्युक्ति साहित्य

निर्युक्तिकारों में आचार्य भद्रबाहु का नाम प्रमुख है। इनका समय विक्रम की ५वीं-६वीं सदी है। आवश्यकनिर्युक्ति में प्रभु महावीर के २७ भवों, स्वप्न, केवलज्ञान के समय विहार का वर्णन प्राप्त होता है। इस निर्युक्ति में गणधरवाद उपलब्ध है। इन्द्रभूति आदि द्वारा पावापुरी में यज्ञ का आयोजन, उसमें इन्द्रभूति आदि ११ गणधरों व उनके शिष्यों के भाग लेने का वर्णन है। फिर प्रभु महावीर से उनकी दार्शनिक चर्चाओं का वर्णन है। इस निर्युक्ति पर निम्नलिखित संस्कृत टीकाएं उपलब्ध हैं जिनका विवरण इस प्रकार है-

१. मलयगिरि वृत्ति	आचार्य श्री मलयगिरि
२. हारिभद्रीया वृत्ति	आचार्य श्री हरिभद्रसूरि
३. प्रदेश व्याख्या	मल्लधारी आचार्य श्री हेमचन्द्र जी
४. विशेषावश्यकभाष्य	श्री जिनभद्रगणि क्षमा श्रमण जी
५. टीका	मल्लधारी आचार्य श्री हेमचन्द्र जी
६. आवश्यकनिर्युक्ति दीपिका	श्री विजयदानसूरि जी
७. चूर्णि	श्री जिनदासगणी महत्तर

चूर्णि साहित्य

चूर्णि में संस्कृत व प्राकृत दोनों भाषाएं मिलती हैं। इस चूर्णि साहित्य में प्रमुख आवश्यक चूर्णि है जिसमें प्रभु महावीर की तपस्या का वर्णन विशद रूप में मिलता है। चूर्णि ग्रन्थों के अतिरिक्त निम्नलिखित ग्रन्थों में प्रभु महावीर का जीवन-वृत्त प्राकृत भाषा में मिलता है-

१. चउपन्न महापुरुष चरिअं	श्री शीलंकाचार्य	विक्रम ८६८

२. महावीर चरिअं	श्री नेमिचन्द्रसूरि	विक्रम ११४१
३. महावीर चरिअं	श्री गुणचन्द्रसूरि	विक्रम ११३९

प्रभु महावीर का जीवन संस्कृत भाषा में भी निम्नलिखित आचार्यों ने लिखा है। यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा में अपना महत्त्व रखते हैं। ज्यादातर ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों ने लिखे हैं-

१. त्रिषष्टिशलाका पुरूष चरित्र	कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र जी	वि.सं.११२६-११२९
२. लघु त्रिषष्ठिशलाका पुरूष चरित्र	सोमप्रभ आचार्य	
३. लघु त्रिशष्ठिशलाका पुरूष चरित्र	महामहिम उपाध्याय श्री मेघविजय जी	
४. तिरेसठ स्मृतिशास्त्र	पण्डित आशाधर जी	
५. महापुराण	मेरूतुंग	
६. पुराण सार संग्रह	अज्ञात	
७. रायेमल्ल अभोदय	पदमचन्द्र	१६१५
८. चतुरविंशती जिनचरित्र	अमरचन्द	
९. वीरोदयकाव्य	मुनि ज्ञानसागर	२०वीं सदी
१०. उत्तरपुराण	आचार्य गुणभद्र	
११. वर्द्धनाम चरित्रम्	महाकवि असंग	
१२. वीर वर्द्धमान चरित्र	भट्टारक सकलकीर्ति	१५वीं शताब्दी

अपभ्रंश साहित्य

इस भाषा में जैन साहित्य विपुल मात्रा में उपलब्ध है। हिन्दी भाषा इसी भाषा से निकली है। कुछ दूसरे साहित्य को छोड़ सारा साहित्य जैन है। प्रभु महावीर पर लिखे ग्रन्थ का वर्णन इस प्रकार है-

१. तिरेसठ महापुरूष गुणालंकार महापुराण	आचार्य पुष्पमित्र	९वीं-१०वीं सदी
२. वढ्माण कहा	जयमित्र	सं. १५४५
३. वढ्माण कहा	अभयदेवसूरि	सं. १५१२
४. महावीर चरित्र	पुष्यदंत	
५. महावीर चरित्र	रइधू	
६. वढमाण कहा	कवि नरषेण	सं. १५१२
७. वढमाण चरित्र	श्री धर्मकवि	

प्रादेशिक भाषाओं में राजस्थानी साहित्य का प्रमुख स्थान है। इस साहित्य में रास व पुराण परम्परा प्रमुख है। भगवान महावीर पर इस भाषा में अभी इस भाषा के हजारों ग्रन्थ अप्रकाशित हैं। निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं-

ग्रन्थ का नाम	कवि का नाम	रचनाकाल
१. महावीर रास	कवि कुमुदचन्द्र	
२. वर्द्धमान रास	कवि नवलसार	
३. महावीरनो रास	पदम कवि	सं. १६०९

४. वर्द्धमान रास	वर्द्धमान कवि	सं. १६६५
५. वर्द्धमान पुराण	नवल राय	सं. १६९१
६. वर्द्धमान चरित्र	केसरी सिंह	सं. १६९१
७. वर्द्धमान सुवनिका	कवि बुद्ध जी	
८. महावीर पुराण	मनसुख सागर	
९. महावीर री विनती	भट्टारक शुभचन्द	
१०. महावीर छंद	भट्टारक शुभचन्द	

आधुनिक साहित्य

आजकल प्रभु महावीर पर भारतीय व विदेशी भाषाओं में इतना साहित्य प्रकाशित हुआ है जितना किसी भारतीय धर्म संस्थापक पर कम ही हुआ हो। हमारे देश की प्रमुख भाषा हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, उर्दू, मराठी, तमिल, आचार्य, उपाध्याय, साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविकाएं व विदेशी लेखक हैं। उस साहित्य में कुछ चुनींदा ग्रन्थों के नाम हम यहां दे रहे हैं जिन ग्रन्थों की इस पुस्तक में सहायता ली गई है-

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	समय	भाषा
१.	श्री महावीर स्वामी चरित्र	वकील नन्दलाल लल्लूभाई बडेरा	१९२५	गुजराती
२.	महावीर कथा	गोपालदास जीवाभाई	१९४१	गुजराती
३.	भगवान महावीर	चन्द्रराज भण्डारी	१९८१	हिन्दी
४.	श्री महावीर चरित्र	मुनि हर्षचन्द	१९२९	गुजराती
५.	श्री वर्धमान चरित्र	स्व. श्री ज्ञानचन्द		हिन्दी
६.	भगवान महावीर का आदर्श जीवन	स्व. श्री चौथमल जी महाराज		हिन्दी
७.	श्रमण भगवान महावीर	मुनि श्री कल्याणविजय जी		हिन्दी
८.	तीर्थंकर वर्द्धमान	श्री श्रीचन्द रामपुरिया		हिन्दी
९.	तीर्थंकर महावीर (१-२)	आचार्य विजयइन्द्रसूरि जी		हिन्दी
१०.	भगवान महावीरः एक अनुशीलन	आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी		हिन्दी
११.	आगम और त्रिपिटकःएक अनुशीलन	मुनि श्री नगराज		हिन्दी
१२.	जैनधर्म का मौलिक इतिहास	आचार्य श्री हस्तीमल जी		हिन्दी
१३.	जैनधर्म का मौलिक इतिहास	पं. बलभद्र		हिन्दी
१४.	सन्मति महावीर	श्री सुरेश मुनि शास्त्री		हिन्दी
१५.	भगवान महावीर	रवीन्द्र जैन, पुरुषोत्तम जैन		पंजाबी
१६.	महावीर सिद्धान्त और उपदेश	उपाध्याय श्री अमर मुनि अनुवादक- रवीन्द्र जैन		पंजाबी
१७.	विश्व ज्योति महावीर	उपाध्याय श्री अमर मुनि		हिन्दी
१८.	चार तीर्थंकर	पं.सुखलाल जी संघवी		हिन्दी
१९.	भगवान महावीर	श्री काशीराम चावला	१९४६	उर्दू
२०.	महावीर वाणी	पं. बेचरदास दोशी		हिन्दी
२१.	वैशाली के राजकुमार तीर्थंकर	डा. नेमिचन्द्र		हिन्दी

	वर्द्धमान महावीर		
२२.	काल्पनिक अध्यात्म महावीर	आचार्य बुद्धिसागर	हिन्दी
२३.	भगवान महावीर	मुनि श्री रत्नविजय	अंग्रेजी
२४.	क्या वर्द्धमान विवाहित थे?	पं. हीरालाल दुग्गड़	हिन्दी
२५.	भगवान महावीर	श्री कामताप्रसाद जैन	हिन्दी
२६.	निर्ग्रन्थ भगवान महावीर	जय भिक्खु	हिन्दी
२७.	युग पुरूष महावीर	शरदकुमार साधक	हिन्दी
२८.	जगद्धारक भगवान महावीर	अम्बालाल नरायाण जोशी	हिन्दी
२९.	भगवान महावीर	डा. शोभानाथ पाठक	हिन्दी
३०.	कुण्डलपुरकेराजकुमार महावीर	जयप्रकाश शर्मा	हिन्दी
३१.	प्रभु महावीर नुं. जीवन चरित्र	मुनि अम्बाविजय	गुजराती
३२.	वर्द्धमान (महाकाव्य)	अनूप कवि	हिन्दी
३३.	वीरायण (महाकाव्य)		हिन्दी
३४.	भगवान महावीर चित्र संपुट	मुनि यशोविजय जी	हिन्दी, गुजराती अंग्रेजी
३५.	Secred Book of East	Dr. Herman Jacobi	English
३६.	ज्ञातपुत्र श्रमण भगवान महावीर	हीरालाल रसिकदास कापड़िया	गुजराती
३७.	त्रिशलानन्दन महावीर	रतिलाल शाह	गुजराती
३८.	श्रमण भगवान महावीर नुं जीवन	मुनि श्री भद्रंकर विजय जी	गुजराती
३९.	महावीर वर्धमान	डा. जगदीशचन्द जैन	हिन्दी
४०.	पुरूषोत्तम महावीर	युवाचार्य महाप्रज्ञ	हिन्दी
४१.	महावीर का अर्थशास्त्र	युवाचार्य महाप्रज्ञ	हिन्दी
४२.	तीर्थंकर महावीर	संपादकः श्रीचन्द सुराना सरस	हिन्दी

हमने यहां उन ग्रंथों का वर्णन किया है जिन्हें हमने पढ़ा या जिनके विषय में हमें जानकारी प्राप्त हुई है और उनकी सहायता से कुछ शब्द लिख पाए। प्रभु महावीर पर अनगिनत ग्रन्थ अभी अप्रकाशित अवस्था में भण्डारों की शोभा बने हुए हैं।

यह बड़ी विडम्बना रही है कि जिस युग पुरूष ने संसार को इतना कुछ दिया, उस युग पुरूष का नाम किसी भी वैदिक ग्रन्थ में नहीं पाया जाता। दूसरी ओर प्रथम तीर्थंकर का वर्णन वेद, उपनिषद्, पुराण साहित्य में भरा पड़ा है। इसका एक ही कारण हमारी समझ में आता है कि प्रभु महावीर का युग यज्ञों, वेद, ब्राह्मण, पशुबलि, दास-प्रथा, छुआछात का युग था। प्रभु महावीर ने अपनी अहिंसक क्रान्ति से इन रूढ़ियों को जड़ से उखाड़ फेंका। उन्होंने वेद और ब्राह्मण दोनों का प्रभुत्व अस्वीकार कर ब्राह्मणों द्वारा बनाई वर्ण व्यवस्था को जड़ से समाप्त कर दिया। धर्म के नाम पर यज्ञों में पशुबलि को कुकृत्य बताया। जाति का आधार कर्म को माना, जन्म को नहीं। स्त्री और दासों की मण्डियां बन्द करवाईं। उन्हें अपने धर्म-संध में बराबर का स्थान दिया। भगवान महावीर और भगवान बुद्ध के कारण ब्राह्मणवाद ५०० वर्ष तक पनप न सका। क्योंकि प्रभु महावीर के समय के राजा भी इन्हीं धर्मों को मानने वाले थे।

प्रभु महावीर और वेद

प्रभु महावीर ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान नहीं माना। ईश्वर को जगत् का कर्त्ता नहीं माना। उन्होंने तो मुक्त आत्मा को परमात्मा माना। ब्राह्मण समाज इस विरोध को सहन न कर सका। उन्होंने जैनों को नास्तिकों की संज्ञा में रखते हुए कहा- ''**नास्तिको वेद निन्दक।**''

वेद का निन्दक नास्तिक है। स्मृतिकार ने नास्तिक की परिभाषा ही बदल डाली। प्रभु महावीर को ब्राह्मण धर्म ने न पहले स्थान दिया न अब दिया है। हां, समय आया, जब जैनों से सत्ता छिन गई तो एक ब्राह्मण सेनापति पुष्य मित्र ने जैनधर्म पर इतने जुल्म किए कि उन्हें बिहार, उड़ीसा, बंगाल से पलायन कर राजस्थान, गुजरात व दक्षिण भारत आना पड़ा। जैनों के पवित्र स्थल समाप्त कर दिए। उड़ीसा के राजा खारवेल जैनधर्म को सारे भारत तक फैयाला था। वहां भी यह इतिहास की बात बन गया।

दक्षिण भारत में जैनों पर अत्याचार

गुप्त काल शान्ति से बीता। चाहे उस समय के राजा ब्राह्मण धर्म को मानने वाले थे फिर भी दूसरे को सन्मान देते थे। फिर कुमारिल भट्ट, शंकराचार्य, मण्डन मिश्र ने राजाओं को प्रेरित कर जैनधर्म पर अनेक प्रतिबंध लगवाए। दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म के समय शैवों ने यह क्रम चालू रखा। दक्षिण भारत के राज्यों में जैनों की संख्या करोड़ों में थी। इस संदर्भ में गजराज राठौर कृत 'जैनधर्म में मौलिक इतिहास' भाग ४ क पृष्ठ ४५ पर लिखा है- ''तिरूअप्पर और ज्ञान सम्बन्धर इन दोनों के समकालीन शैव सन्तों ने एकेश्वरवाद के सिद्धान्त का प्रचार किया।''

''तिरूअप्पर पहले जैन साधु थे फिर शैव बने। पूर्व व्यापक प्रभाव के कारण उन्हें राज्याश्रय मिला। तिरू ज्ञान सम्बन्धर को मधुरापति पाण्डव राज सुन्दर पाण्डव ने समर्थन दिया। उसका दूसरा नाम कुब्ज पाण्डव था उसने जैनधर्म का परित्याग कर दिया। इसी समय तिरूअप्पर नामक, जो पहले धर्मसेन नामक जैन आचार्य था, वह शैवों से चर्चा में हार गया। उसके प्रभाव से कांचीपति पल्लवराज महेन्द्र बदले। प्रथम (६००-६३०) में जैनधर्म त्याग शैव बन गया।''

शैवों द्वारा जैनों पर किए गए अत्याचार की साक्षी देने वाले पोरियपुराण, मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर के चित्र काफी हैं। इस तरह तमिलनाडू से जैनधर्म समाप्त हो गया। फिर आन्ध्र प्रदेश में लिंगायत सम्प्रदाय ने आग में तेल का काम किया। रामानुज आचार्य ने (१२सदी) में अपने अभियान में जैनों का धर्म परिवर्तन करवाया। इन जुल्मों के दो ही कारण थे- जैनों को राज्याश्रय न मिलना तथा जैन संघों में फूट। मुस्लिम हमला कर पहले गुजरात के समुद्री तट, फिर कंधार के खुश्क मार्ग से जैनधर्म को नुक्सान पहुंचाते रहे।

हिन्दू या ब्राह्मण

साहित्य में तो श्रमण व ब्राह्मण शब्द ही उपलब्ध होते हैं। ईरानी ने सबसे पहले सिन्धु के किनारे रहने वालों को 'हिन्दू' कहा। फिर मुस्लिम ने इसी नाम से पुकारा। मुगल काल में इस देश को हिन्दुस्तान कहते थे। आज ब्राह्मण स्वयं को हिन्दू मानकर जैनधर्म, सिक्ख, बौद्ध को इसकी शाखा कहते हैं। पर न तो भारतीय संविधान की धारा में ऐसा वर्णन है और न ही हिन्दू साहित्य उनकी बात को स्वीकार करने को तैयार है। हिन्दू शब्द भौगोलिक शब्द है किसी धर्म का प्रतीक नहीं। १९४७ में हिन्दुस्तान दो भागों में बंट गया भारत व पाकिस्तान। इस दृष्टि से यहां का हर नागरिक भारतीय है धार्मिक दृष्टि हिन्दू नहीं। अगर ऐसा हो तो जैन और अन्य धर्म का अन्तर स्पष्ट न हो। जैन किसी भी दृष्टि ने हिन्दू धर्म का अंग नहीं। जैनों का अपना साहित्य, तीर्थंकर, सिद्धान्त व तीर्थस्थान हैं।

बौद्ध साहित्य में भगवान महावीर

अगर ब्राह्मणों ने प्रभु महावीर को २६०० साल तक महत्व नहीं दिया, तो भी सत्य समाप्त न हो सका। बौद्ध ग्रन्थों में प्रभु महावीर का ५१ बार वर्णन उपलब्ध होता है। यह बात दूसरी है यहां प्रभु महावीर बुद्ध के विरोध में हैं। आचार्य मुनि श्री नगराज जी ने अपने ग्रन्थ '**आगम और त्रिपिटक**' भाग १ में इसका अच्छा संकलन किया है। डा. भागचन्द जैन ने भी इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। इन ५१ प्रसंगों में ३२ तो मूल त्रिपिटकों के हैं। मज्झिझम निकाय के दस हैं, दीर्घनिकाय के चार हैं, अंगुत्तर निकाय व संयुक्त निकाय के सात-सात हैं। सुत्तनिपात में दो और विनयपिटक में दो उल्लेख हैं। इन उल्लेखों में अनेकों विषयों पर बुद्ध और निर्ग्रन्थों की बनाई चर्चाओ, घटनाओं का उल्लेख है।

बौद्ध ग्रन्थों से प्रभु पार्श्वनाथ की चातुर्याम परम्परा पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। प्रभु महावीर का नाम निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र आया है जो उनका गुण निष्पन्न नाम है। निर्ग्रन्थ जैनधमज्ञ का प्राचीन नाम है। ज्ञातृ वंश के सपूत होने के कारण वह ज्ञातपुत्र कहलाए। ज्ञात लिच्छवियों की श्रेणी थी जिसके प्रमुख राजा सिद्धार्थ थे। उनकी माता त्रिशला चेटकराज की बहन थीं।

बौद्ध साहित्य में कई स्थानों पर निर्ग्रन्थों की तपस्या, कर्मवाद की चर्चा है। अनेक जैन पारिभाषिक शब्द आए हैं।

इस तरह बौद्ध साहित्य में हमें एक नहीं दो तीर्थंकरों की परम्परा का अच्छा ज्ञान होता है। महात्मा बुद्ध के चाचा वप्प भी निर्ग्रन्थ थे। एक मान्यता के अनुसार भगवान बुद्ध भी कुछ समय जैन मुनियों के शिष्य रहे। अगर बौद्ध ग्रन्थ न होते तो प्रभु महावीर के सारे जीवन का प्रमाण देना मुश्किल था। क्योंकि कुछ पारिभाषिक शब्दों की एकता के कारण कुछ विदेशी लेखकों ने प्रभु महावीर और बुद्ध को एक माना। किसी ने जैनधर्म को बौद्ध धर्म की शाखा माना। पर त्रिपिटक साहित्य ने एक क्षण में सारी समस्या हल कर दी। इतना सब कुछ होते हुए भी भगवान महावीर के बारे में, जैन मान्यता क्षीण नहीं हुई। जैन आचार्य प्रभु महावीर का जीवन उनके जीवनकाल व जैनधर्म में अब तक लिखते आए हैं।

भारतीय साहित्य के सिर्फ बौद्ध साहित्य में प्रभु महावीर का वर्णन मिलता है। जैनधर्म का वर्णन, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की परम्परा उनके धर्म का वर्णन वेद, पुराण, उपनिषद् साहित्य में श्रमणों के अन्तर्गत आया है। बुद्ध का वर्णन तो मात्र पुराणों में है, वेदों में नहीं। हालांकि बुद्ध साहित्य में प्रभु महावीर को महात्मा बुद्ध के प्रतिद्वन्द्वी के रूप में चित्रित किया गया है। पर जैनधर्म का इतिहास संघर्षों का इतिहास रहा है। जैनों को मात्र ब्राह्मणों से ही नहीं, बौद्धों से भी संघर्ष करना पड़ा। अकलंक व आचार्य हरिभद्र की कथा इस बात का प्रमाण है कि जैनों को बौद्धों ने भी कष्ट दिए।

इन सब बातों के विपरीत एक भी ऐसा उदाहरण उपलब्ध नहीं, जब किसी जैन राजा ने किसी अन्य धर्म पर जुल्म ढाया हो। जैन हमेशा देशभक्त लोग रहे हैं। मौर्य युग हो या नन्द साम्राज्य, खारवेल हो या कुमारपाल, सभी राजाओं ने जैनधर्म के साथ अन्य धर्मों को पूर्ण राजकीय संरक्षण दिया। कुमारपाल ने सोमनाथ के मन्दिर का जीर्णोद्धार किया। जैन मंत्रियों ने जैन मन्दिरों के अतिरिक्त हिन्दू मन्दिर व मस्जिदों के निर्माण में सहयोग दिया। आज भी जब विश्वबंधुता व अहिंसा की बात होती है तो जैनधर्म का कार्य सबसे आगे है। अहिंसा का सम्बन्ध जितना महावीरसे है उतना किसी महापुरुष से नहीं। जैनधर्म के बारे में अन्य मिथ्यालाप मिलते हैं जिन्हें हमारी पाठ्य पुस्तकों में डाल दिया गया है जिन्हें हमारे छोटे बच्चे पढ़ते हैं। जैन समाज इस जन्म शताब्दी के २६००वर्ष पर इस बात पर ध्यान देने की परमावश्यकता है कि जैनों की स्वतन्त्र सत्ता, इतिहास, संस्कृति, सभ्यता के बारे में अधिक से अधिक लोगों को परिचय कराया जाए। जैनों को जैनत्व के रूप में परिचय कराना होगा। नहीं तो जैन, बौद्ध की तरह इतिहास की बात रह जाएंगे।

परम्पराएं ऐसे ही समाप्त होती हैं पर जैनों पर जुल्म आज भी जारी हैं। कोई भी सत्ताधारी हो कोई न कोई घटना घटित हो जाती है। आज भी जैन मन्दिरों के निर्माण में रुकावट डाली जा रही है, जैनधर्म को मिटाने का दृढ़ प्रयत्न जारी है।

१८८१ से जैन अल्पसंख्यक समाज रहा था। इसका संवैधानिक अधिकार प्राप्त नहीं हुआ था जो कि लम्बे संघर्ष के पश्चात 27 जनवरी, 2014 को प्राप्त हुआ। ब्राह्मण समाज फांसीवादी परम्परा को आगे बढ़ाए हुए हैं। पर इन बातों के लिए जैनों की अज्ञानता भी प्रमुख दोषी थी उनकी न कोई राजनैतिक विचारधारा है न अन्त। मंच के बिना सरकार कोई बात समझाई नहीं जा सकती है न परम्परा की रक्षा की जा सकती है।

विवाह के विषय में दिगम्बर मान्यता

प्रसिद्ध जैन विद्वान पं. वलभद्र जैन के जैनधर्म के मौलिक इतिहास भाग-२ में इस प्रकार लिखा है। हमने पुस्तक के पृष्ठ ५२ पर जो लिखा है उसके प्रकाशन में त्रुटियां रह गई हैं। लाईन १६ पर श्वेताम्बर के स्थान पर दिगम्बर पढ़ा जाए। राजा जितशत्रु को प्रभु का फूफा हमने पं. वलभद्र जैन की पुस्तक जैनधर्म का मौलिक इतिहास को आधार मानकर लिखा है। श्वेताम्बर साहित्य इस रिश्ते का उल्लेख नहीं ये बात हम अपने विद्वानों पर छोड़ते हैं। पाठकों से अनुरोध है कि यह पृष्ठ को शुद्ध करके पढ़े।

''भगवान महावीर का बाल्य जीवन उत्तरोत्तर युवावस्था में परिणत होता गया। इस अवस्था में भी उनका चित्त भोगों की ओर नहीं था। यद्यपि उन्हें भोग और उपभोग की वस्तुओं की कमी नहीं थी, किन्तु उनके अन्तर्मानस में उनके प्रति कोई आकर्षण नहीं था। वे जल में कमलवत् उनसे निस्पृह रहते थे। वे उस काल में होने वाली विषम परिस्थिति से परिचित थे। राज्यकार्य में भी उनका मन नहीं लगता था। राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला उन्हें गृहस्थ मार्गको अपनाने की प्रेरणा करते थे और चाहते थे कि वर्द्धमान का चित्त किसी तरह राज्य कार्य के संचालन की ओर हो। एक दिन राजा सिद्धार्थ और माता त्रिशला ने महावीर को वैवाहिक सम्बन्ध करने के लिए प्रेरित किया। कलिंग देश का राजा जितशत्रु, जिनके साथ राजा सिद्धार्थ की छोटी बहन यशोदा का विवाह हुआ था, अपनी पुत्री यशोदया के साथ कुमार वर्द्धमान का विवाह सम्बन्ध करना चाहता था। परन्तु कुमार वर्द्धमान ने इसे स्वीकार नहीं किया।'' पं. वलभद्र जैन ने यह प्रमाण कहां से लिखा है, इसका वर्णण उन्होंने नहीं किया।

कुछ तथ्य

हमने इसके लिए गणि श्री कल्याणविजय जी महाराज व आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का अनुकरण किया है। दोनों महापुरूषों ने भगवान महावीर के जीवन के हर पहलू को छुआ है। गणि कल्याणविजय तो स्वयं उन स्थानों पर गए हैं, जहां प्रभु महावीर पधारे थे। वह इस सदी के प्रमुख जैन इतिहासकार हैं। उन्होंने आगमों के आधार पर प्रभु महावीर के विहार क्षेत्र को तय किया है जिसे सभी विद्वानों ने मान्य किया है।

आचार्य देवेन्द्र मुनि जी की कृति महावीर का जीवन-चरित्र का एक शोध प्रबन्ध है। उन्होंने सभी लिखित जीवन-चरित्र ग्रन्थों को सामने रखकर हर बात लिखी है। आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी की पुस्तक **भगवान महावीरः एक अनुशीलन** हमारे लिए आधार भूत बनी है।

हमारा प्रयास रहा है कि प्रस्तुत पुस्तक में श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यताओं का उल्लेख कर दिया जाए। प्रभु महावीर का जीवन-चरित्र विभिन्न समय पर विभिन्न आचार्यों व विद्वानों ने भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशित किया है। उन सबका वर्णन यहां इसलिए करना जरूरी है कि हमने इन ग्रन्थों का आधार इस

पुस्तक में लिया गया है-

प्रभु महावीर के जीवन स्रोत का विवरण हमें इन ग्रन्थों से उपलब्ध है जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	रचयिता	समय	भाषा
१.	आचारांगसूत्र, श्रुतस्कंध-प्रथम द्वितीय	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
२.	सूत्रकृतांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
३.	स्थानांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
४.	समवायांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
५.	भगवतीसूत्र	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
६.	ज्ञाताधर्मकथांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
७.	उपासकदशांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
८.	अन्तकृद्दशांग	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
९.	अनुत्तरौपपातिक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१०.	विपाक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
११.	औपपातिक	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१२.	निरयावलिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१३.	राजप्रश्नीय	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१४.	कल्पावतंसिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१५.	पुष्पिका	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत
१६.	उत्तराध्ययन	आर्य सुधर्मा	ई.पू.छटी शताब्दी	अर्ध-मागधी, प्राकृत

इन सभी ग्रंन्थों का संकलन भगवान महावीर के समय उनके पांचवें गणधर आर्य सुधर्मा ने किया था। इनमें प्रभु महावीर के जीवन की प्रमख घटनाओं का वर्णन आ गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ

हमारा लेखन क्षेत्र मूलतः पंजाबी भाषा रहा है। जिनशासन प्रभाविका, जैनज्योति उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रेरणा से ५० के करीब छोटी-बड़ी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें आगमों के अनुवाद, कथा साहित्य, स्तोत्र साहित्य, इतिहास व पुरातत्व पर पुस्तकें शामिल हैं। महासाध्वी श्री सुधा जी की सतप्रेरणा और आशीर्वाद का फल है कि उनका साहित्य सारे संसार में पहुंच रहा है। इस बीमारी की अवस्था में गुरुणी स्वर्णा आत्म-बल इतना उच्चा है कि लगता नहीं कि वह बीमार हैं। उनके अधूरे कार्यो को आगे बढ़ाना श्रीसंघ का कर्त्तव्य है। हमारा जीवन उनके उपकारों की कहानी है। उनकी प्रेरणा से हम पंजाबी में प्रथम बार जैन साहित्य लिख सके। किसी जैन साध्वी को भारत के राष्ट्रपति ने **जैन ज्योति पद** दिया। पंजाबी विश्वविद्यालय ने ''आचार्य आत्माराम जैन भाषणमाला'' में भाषण करने का निमन्त्रण दिया। उन्हें पद से अलंकृत किया। उनका ५०वां दीक्षा महोत्सव पद उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। यही नहीं प्रभु महावीर का २५०० साला निर्वाण महोत्सव उन्हीं की प्रेरणा व दिशा-निर्देश में मनाया गया। सरकारी समिति की वह विशिष्ट अतिथि बनीं। ये सारे कार्य प्रथम बार हुए। उनका जीवन हर साधु-साध्वी के लिए प्रेरणा स्रोत है।

हमारी गुरुणी ज्ञान की भण्डार हैं। इतना सब पाकर भी उन्हें अहं छू नहीं गया। उनके उपकारों को भुलाना असम्भव है। वह प्रवर्तिनी महासती श्री पार्वती जी महाराज की शिष्यानुशिष्या हैं प्रवर्तिनी जी हिन्दी की प्रथम जैन महिला लेखिका थीं। उनके सन्मान में आपने इण्टरनेशनल पार्वती जैन अवार्ड स्थापित करवाया। हमारे हर कार्य में उनका स्नेह व आशीर्वाद रहता है। वह भक्तों को हर कष्ट से उबारती हैं। साध्वी सुधा जी व साध्वी राजकुमारी उनकी दो प्रमुख शिष्या हैं। उनके परिवार में ३० के करीब साध्वियां हैं जो सभी सम्पन्न परिवारों से सम्बन्धित हैं। सांसारिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हैं। साध्वी किरण जी, साध्वी संतोष जी, डा. स्मृति जी का पूर्ण सहयोग रहा है। साध्वी डा. स्मृति जी बहुत ही प्रतिभाशालिनी साध्वी हैं। वे अध्ययनशील हैं। इस पुस्तक की पांडुलिपि का निरीक्षण, संपादन व संशोधन उन्होंने अत्यधिक श्रम से किया है। सभी साध्वी गुरुणी की सेवा सर्म्पणभाव से करती हैं। अम्बाला में ३२ साल से विराजमान महासाध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी इतनी प्रसिद्ध हैं कि जैन-अजैन सभी इन्हें पहचानते हैं। आप सम्प्रदाय, भाषा, जाति के भेद से दूर हैं। आपके गुणों की झलक आपके शिष्या परिवार पर भी देखने को मिलती है। इस पुस्तक में भगवान महावीर जीवन से सम्बन्धित अनेक रंगीन चित्र हमें उ.भा. प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के विद्वान शिष्यरत्न उपप्रवर्तक श्री अमरमुनि जी के सचित्र कल्पसूत्र से प्राप्त हुए हैं। श्री अमर मुनि जी महाराज की इस उदारता व कला के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञ हैं।

प्रेरिका महाश्रमणी ज्ञानप्रज्ञा साध्वी सुधा जी महाराज

आप साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की प्रमुख शिष्या हैं। साध्वी राजकुमारी जी के बाद आपका स्थान है। आपका जन्म पट्टी में सम्पन्न जैन परिवार में हुआ था। बी.ए. तक आपने शिक्षा ग्रहण की। आप बहुभाषाविद्, विनम्र प्रवचन भूषण, शास्त्रों के रहस्यों की ज्ञाता साध्वी हैं। सांसारिक दृष्टि से आप महासाध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी की भानजी हैं। आप सभी कामों को सहज ढंग से कर डालती हैं।

हमारे जीवन पर आपके अथाह उपकार हैं। गुरुणी जी की हर बात का फैसला लेने का अधिकार आपका है। आप धर्म-प्रचार में प्रेरणा देती रहती हैं। पंजाबी साहित्य की सतत धारा को आप प्रज्वलित रखती हैं। गुरुणी जी के भक्तों को धर्म कार्यों की प्रेरणा देती रहती हैं।

कई वर्षों से आपका आग्रह था कि पंजाबी साहित्य पंजाब तक सीमित है। हमें एक सर्वमान्य प्रभु महावीर का जीवन चरित्र तैयार करना चाहिए। उनकी बलवती प्रेरणा इस वर्ष रंग लाई।

सौभाग्य से अगला वर्ष प्रभु महावीर के जन्म-कल्याणक के २६०० वर्ष समाप्त होगा। उस अवसर पर हिन्दी भाषा में हमारा यह छोटा प्रयास है। इसके लिए हम पुनः स्व. आचार्य देवेन्द्र मुनि जी महाराज व गणि कल्याणविजय जी महाराज को पुनः प्रणाम करते हैं जिनके ग्रन्थों के कारण हम इस कार्य को सहजता से कर पाए। हम उन सभी ग्रन्थों व प्रकाशकों के अभारी हैं, जिनके ग्रन्थों की हमारे द्वारा सहायता ली गई है। हम श्रमणसंघ के चर्तुथ आचार्य डा. शिव मुनि के आभारी हैं कि उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया। साथ ही मुनि श्री जयचन्द जी महाराज व वीरेन्द्र मुनि के सुझावों के लिए आभार प्रकट करते हैं।

यह ग्रन्थ सचित्र है। इन सभी चित्रों के लिए आप इस ग्रन्थ के व्यवस्थापक जैन जगत् के प्रसिद्ध विद्वान, भाई श्री श्रीचन्द जी सुराना के आभारी हैं, जिनकी कृपा से हमें चित्र मिले। जिनका सहयोग इस प्रकाशन में काम आया। भाई राजेश जी इस ग्रन्थ के प्रकाशक हैं उनका सहयोग भी किसी से कम नहीं। हम समस्त सुराना परिवार व प्रकाशन विभाग के कर्मचारियों के अभारी हैं जिन्होंने भाषा व लिपि की कठिनाईयों को झेला और श्रमपूर्वक शुद्ध मुद्रण कराया।

सबसे बढ़कर हम दानी सज्जनों के अभारी हैं जिन्होंने गुरु-भक्ति व प्रभु-भक्ति का प्रमाण देते हुए अपने द्रव्य का सदुपयोग किया।

हम दोनों (रवीन्द्र व पुरुषोत्तम) प्रेरिका व समस्त साध्वी परिवार इस ग्रन्थ को जिनशासन प्रभाविका, जैन ज्योति, महाश्रमणी जैन पंजाबी साहित्य की प्रथम प्रेरिका, लेखिका, शास्त्र मर्मज्ञ गुरुणी, उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज के कर-कमलों में भेंट करते हैं। प्रभु महावीर के २६०० साला जन्म दिन पर हमारी भेंट स्वीकार करें।

विद्वत जनों से प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ के लेखन प्रकाशन में बहुत-सी त्रुटियां रह जाना स्वाभाविक है। विचार भेद कोई रह सकता है जिसके कारण किसी की मान्यता परम्परा को आघात पहुंचा हो, तो हम मन, वचन, काया से प्रभु महावीर की साक्षी से क्षमा मांगते हैं।

हमारा हिन्दी भाषा में प्रथम प्रयत्न है। विद्वत् जन इस ग्रन्थ में अच्छी बात ग्रहण करें। जो त्रुटियां हों, वह हमारी झोली में डाल दें। लाइब्रेरी की पुस्तकों के लिए आचार्य विमल मुनि जी महाराज, साध्वी डा. साधना जी महाराज व आचार्य नित्यानंद जी महाराज का आशीर्वाद व सहयोग हमें मिलता रहा है। इस महत्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

एक बार पुनः इस ग्रन्थ की आशीर्वादिका साध्वी राजकुमारी जी महाराज प्रेरिका साध्वी सुधा जी महाराज तथा संपादिका डा. स्मृति जी महाराज का आभार प्रकट करते हैं। जिन विद्वानों ने सुझाव दिए उनके भी आभारी हैं। वह सब साधुवाद व धन्यवाद के पात्र हैं।

पाठकों एवं श्रद्धालुओं की बहुत देर से मांग चली आ रही थी कि इस पुस्तक का पुनः प्रकाशन होना चाहिए। इसी मांग की आपूर्ति के लिए महाश्रमणी, शासन ज्योति श्री सुधा जी महाराज के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

द्वितीय संस्करण की भूमिका : इस ग्रंथ का प्रथम प्रकाशन भगवान महावीर के 2600 साला जन्म कल्याणक के अवसर पर हुआ था। इसका विमोचन यूनेस्को द्वारा आयोजित हिन्दी सम्मेलन में सम्पन्न हुआ। जिस समय यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ, उस समय हमारी श्रद्धेय गुरुणी उपप्रवर्त्तिनी, संथारा साधिका, साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज रुग्ण अवस्था में थीं। हर्ष का विषय है कि हम उन्हें इस ग्रंथ का प्रथम संस्करण भेंट कर सके। अब इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण उनके देवलोक गमन के पश्चात उनकी सुशिष्या महाश्रमणी, जैन शासन प्रभाविका, सरलात्मा गुरुणी साध्वी श्री सुधा जी महाराज की प्रेरणा से हो रहा है। प्रथम संस्करण की प्रेरिका भी वही थीं। इस संस्करण में हमने कुछ सुधार किए हैं। कुछ घटनाओं का उल्लेख इस संस्करण में दर्ज किया गया है। ध्यान रखा है कि श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों द्वारा मान्य भगवान महावीर से संबंधित सभी घटनाओं का वर्णन इसमें समाहित हो जाए।

इस ग्रंथ का कुशल संपादन गुरुणी सुधा जी की सुशिष्या, महान विदुषी, साध्वी डा. स्मृति जी महाराज ने किया है। उन्होंने दिन-रात एक करके अंश को योग्य स्थान पर रखने की चेष्टा की है। हम उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी उनका सहयोग बना रहेगा।

इस ग्रंथ के प्रथम संस्करण पर बहुत से विद्वान मुनियों, आचार्यों व साध्वियों की प्रतिक्रिया हमें प्राप्त हुई। हम उन सबके आभारी हैं। विशेष रूप से श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य डा. शिवमुनि जी महाराज व आचार्यों श्री महाप्रज्ञ के सुशिष्य श्री जयचंद जी महाराज का उनके आशीर्वाद के लिए आभार प्रकट करते हैं।

हम आभारी हैं प्रसिद्ध वैबसाइट जैन वर्ल्ड यू.एस.ए. के प्रधान डा. श्री विनोद दरियापुरकर अटलांटा व मैडम एलिजाबेथ ल्यूमैन के इस पुस्तक के लिए भेजे शुभकामना संदेश के लिए आभारी हैं। साथ हैं इस वैबसाइट के संचालक श्री सुनील देशमणि शोलापुर के सहयोग के लिए भी आभार व्यक्त करते हैं।

हम इस ग्रंथ के मुद्रक का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने हर समय हमें सहयोग ही नहीं दिया बल्कि

अपनी कीमती सुझाव भी इस ग्रंथ के लिए दिए।

हम दानी सज्जनों का भी विशेष आभार प्रकट करते हैं जिनके सहयोग के कारण यह ग्रंथ पुनः मुद्रित हो सका।

हर्ष का विषय है कि इस ग्रंथ का पुर्न मुद्रण महाश्रमणी, शासन प्रभाविका, सरलात्मा श्री सुधा जी महाराज के जन्म दिवस पर हो रहा है। हम उनके जन्म दिवस पर जहां शासनदेव से उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं वहां उन्हें ग्रंथ भेंट करते हुए प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं।

तृतीय संस्करण की भूमिका : हर्ष का विषय है कि यह वर्ष हमारी गुरुणी शासन प्रभाविका, सरलात्मा, उपप्रवर्त्तिनी साध्वी सुधा जी महाराज की संयम साधना की स्वर्ण जयंती व उनकी विदुषी शिष्या डा. स्मृति जी महाराज की रजत जयंती के अवसर पर होने जा रहा है। इस ग्रंथ का प्रचार-प्रसार जैनों के सभी सम्प्रदायों व राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय के विद्वानों में इतना हुआ कि द्वितीय संस्करण शीघ्र ही सबके हाथों में आ गया। हमारी इस मजबूरी को अमरीका की संस्था डब्ल्यूडब्ल्यूजैनवर्ल्ड के प्रधान श्री विनोद दरियापुरकर ने समझा और इस ग्रंथ को अपनी वैबसाइट में स्थान दिया। हर्ष का विषय है कि अब इसका तृतीय प्रकाशन हो रहा है। हमें जिन जैनाचार्यों, प्रवर्त्तकश्री, व जैन विद्या से जुड़े विद्वानों, लेखकों और प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों का सहयोग मिला, वे सभी सराहना के पात्र हैं। इस ग्रंथ के लिए विशेष रूप से संदेश प्रेषित करने वाले डा. पीटर फ्लूगल यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन, फ्रांस की डा. नलिनी बलबीर, वैशाली के जैन शोधपीठ के डायरैक्टर डा. ऋषभ चंद्र जैन, डा. प्रद्युम्न शाह सिंह जैन शोध विभाग पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला व डा. धर्म सिंह सम्पादक सिख विश्व कोष, वर्ल्ड फाऊंडेशन यू.एस.ए. के चेयरमैन श्री विनोद दरियापुरकर और जैन वर्ल्ड फाऊंडेशन की एलिजाबेथ ल्यूमेन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में उनका सहयोग बना रहेगा।

चतुर्थ संस्करण की भूमिका : परम हर्ष का विषय है कि पाठकों की बढ़ती मांग, भगवान महावीर 2552वें निर्वाण महोत्सव व उपप्रवर्तिनी संथारा साधिका गुरणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दीक्षा महोत्सव पर सभी आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, प्रवर्तिनी श्री को वंदन करता हुआ यह ग्रंथ पाठकों को प्रस्तुत करता हूं। संपादिका डा. स्मृति जी महाराज का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने चतुर्थ प्रकाशन में प्रेरणा दी।

शुभचिंतक

रविन्द्र जैन

प्रस्तुत पुस्तक की प्रेरिका
दिव्य विभूति श्री सुधा जी महाराज

- प्रवचन प्रभाविका साध्वी श्री किरण जी म.

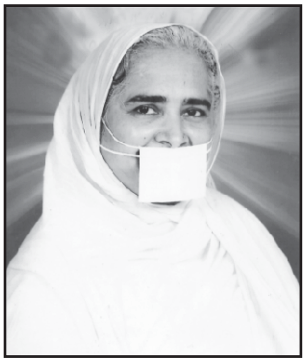

महान् कार्यों को करने की सद्प्रेरणा महामानवों की अन्तःस्थली से स्वतः अद्‌भुत होती है। वर्तमान युग में वर्धमान महावीर की जीवनी को जन-जन तक पहुंचाने का सुकार्य यद्यपि बहुत समय से हमारे मन में तरंगित था तथापि इस महान् कार्य को प्रेरणा मिली है- दिव्य विभूति महासती श्री सुधा जी महाराज से। स्वर्णमय नक्षत्र-खचित जैन गगन का आप एक विलक्षण नक्षत्र हैं, ध्रुवतारा हैं, आध्यात्मिक पक्ष से आप उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की सुशिष्या हैं धर्मपुत्री हैं, तो भौतिक पक्ष से उनकी भानजी हैं।

अगस्त माह की प्रथम तिथि को सन् १९४३ में पंजाब राज्य के पट्टी नगर में श्री त्रिलोकचन्द जी एवं श्री कौशल्यादेवी जी के सुगृह में आपका जन्म हुआ। पंजाब की वीर प्रसूता भूमि आन-बान और शान के लिए विश्व विख्यात है, जिसने शूरवीरों, दानवीरों, ऋषि-मुनियों, भक्तजनों जैसे रत्नों को जन्म देकर अपने आपको धन्य किया है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु गोविन्दसिंह जैसे शूरवीरों की कर्मभूमि और नानक जैसे भक्त-शिरोमणि, आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज जैसे महान् सन्तों एवं महान् व्यक्तित्व को जन्म देने वाली महान् यही पंजाब की पावनधरा है। इतिहास की पुनरावृत्ति होती ही है। परम्परा को कायम रखते हुए जैन जगत की जीवन्त ज्योति गुरुणी श्री सुधा जी महाराज ने भी इस अंचल को अपने स्वनाम धन्य जीवन से गौरवान्वित किया। आध्यात्मिकता का वातावरण तो परिवेश से मिला ही किन्तु आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज जैसे महान् सन्त की जीवनयात्रा के अन्तिम क्षणों में उनकी अपरिमित सहिष्णुता, वेदन क्षमता देखकर आपके हृदय में वैराग्य के अंकुर फूट पड़े। शनैः-शनैः वैराग्य के नन्हें पौधे को वृक्ष बनने के अनुकूल वातावरण मिलता रहा और जब यह महान् वृक्ष अपनी शीतलछाया से धराधाम के आतप तप्त जनों को छाया देने के लिए आतुर हो उठा तो विवश होकर पारिवारिक जनों को दीक्षा की आज्ञा देनी पड़ी। १४ फरवरी १९६५ के शुभ दिन श्री प्रेमचन्द्र जी महाराज व श्री हेमचन्द्र जी महाराज के पावन सान्निध्य में आपने हरियाणा प्रदेश के कैथल प्रान्त में सर्वविरति दीक्षा अंगीकार की और तब से उपप्रवर्तिनी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज की द्वितीय शिष्या के रूप में धर्म की प्रभावना अनवरत कर रही हैं।

अहंकार रहित, सरल, संयमपूर्ण आपका जीवन स्वर्ण की तरह अनुपम है। साध्वी श्री स्वर्णकान्ता जी महाराज जैसी उच्चकोटि की साध्वी रत्ना के लिए एक सुशिष्या की भांति आपके हृदय में पूर्ण समर्पण व निष्ठा का भाव है। आपके मुखमण्डल पर तेज के साथ करूणा, प्रभाव के साथ निष्ठा, तथा व्यावहारिकता के साथ आध्यात्मिकता का मंजुल समन्वय है। जिस प्रकार नदियों में गंगा, पुष्पों में गुलाब, वृक्षों में चन्दन व नक्षत्रों में चन्द्रमा है। उसी प्रकार स्वर्णमाला की आप समुज्ज्वल मणि है। आपकी वाणी से सद्प्रेरणा पाकर अनेक आत्माओं ने अपनी जीवनधारा को नूतन आयाम दिया है। तपस्या के क्षेत्र में भी आपके वर्षीतप, अठाई व्रत आदि की तपस्याएं महती उपलब्धियां हैं। भंडारी श्री पद्मचंद्र जी महाराज द्वारा आपको 'प्रदीप्त तपस्विनी' की पदवी से अलंकृत किया गया है। आप जैसी तप-त्याग-संयम समर्पण की प्रतिमा के दीर्घायुत्व

व उत्तम स्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं। आपकी प्रेरणा से २४वें तीर्थंकर वर्धमान भगवान महावीर की जीवनी प्रकाशित होने जा रही है यह बहुत ही खुशी का प्रसंग है इसको पढ़ने से जन जीवन को प्रेरणा मिलेगी। इसके लेखक श्री रविन्द्र कुमार जैन और स्व. श्री पुरुषोत्तम जैन जिन्होंने अपना कीमती समय निकालकर इस ग्रन्थ को लिखने में पूरा-पूरा जीवन का लाभ लिया। यह मेरे लिए मंगलमय समाचार है कि इस ग्रंथ का चतुर्थ प्रकाशन भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण महोत्सव व उपप्रवर्तिनी संथारा साधिका गुरणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की दीक्षा जयंती पर सम्पन्न हो रहा है। ऐसे ही यह भविष्य में धर्मकार्यों में समय लगाते रहे। एक बार पुनः मैं दिव्य विभूति, इस ग्रन्थ की महान् प्रेरिका प्रदीप्त तपस्विनी गुरुणी श्री सुधा जी महाराज के प्रति शासनेश प्रभु से यही प्रार्थना करती हूं कि युगों तक आपका मार्गदर्शन हम सबको और समाज को प्राप्त होता रहे। आपकी शक्ति वृद्धिगत होकर समाज निर्माण की दिशा में लगी रहे और आपके पुनीत आशीर्वाद और जीवनोत्थान व साहित्य रचना की प्रेरणाएं सबको मिले। आपश्री जी की सदैव जय विजय हो। स्वास्थ्य लाभ, वृद्धि निरन्तर होती रहे। मेरी लाख-लाख शुभ कामनाएं।

इसी मंगल कामना, मंगल याचना के साथ-साथ

नमामि तां यस्या मतिः सरला।
नमामि तां यस्या आकृतिः सरला।
नमामि सुधासम अन्तःसन्तोषदायिनीं
यस्या गतिः यस्या जागृतिः सरला।

●●

प्रस्तुत पुस्तक की सम्पादिका
डा. स्मृति जी महाराज

साध्वी पूर्णिमा (एम.ए.)

महापुरुष विश्व की महान विभूति होते हैं जो साधारण मनुष्य की तरह जन्म लेते हैं किन्तु जीवन की यात्रा पर आने के बाद वे विरल और अलौकिक गुणों को अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। वे अपने सुख-दुख, हानि-लाभ से ऊपर उठकर मानव मात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन को अर्पित कर देते हैं उनके समर्पण की भावना उन्हें महापुरुषों की श्रेणी में उपस्थित कर देती है। महासाध्वी डा. स्मृति जी महाराज की यही विशेषताएं इन्हें महापुरुष की कोटि में रखती हैं।

महासाध्वी डा. स्मृति जी महाराज का जन्म अम्बाला नगरी में हुआ। अम्बाला वह पावन धरा है जो तपस्वी श्री लाल चंद जी महाराज जैसे तपस्वी संत, आचार्य पूज्य कांशीराम जी महाराज जैसे विद्वदरत्न, उपप्रवर्तक तपस्वी श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज जैसे सरल संत एवं उपप्रवर्तिनी संथारा साधिका गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज जैसे तपी-जपी महात्माओं की कर्मभूमि रही है। उसी पुण्य धरा पर 17 मई 1969 ई. को आपका जन्म हुआ। आपके माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला पिता श्री तरसेम जैन एवं माता श्रीमती शशि कांता जी को। परिवार में सबसे लघु होने की वजह से माता-पिता, भाई-बहन का नैसर्गिक स्नेह आपको प्राप्त हुआ। कुशाग्र मेधा की धनी इस बालिका ने लौकिक क्षेत्र में हर परीक्षा अव्वल श्रेणी में उत्तीर्ण की। घर में रहते हुए भी हिन्दी में स्नातकोत्तर परीक्षा भी अव्वल रहकर उत्तीर्ण की। इसी दौरान पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण मन के अंदर वैराग्य के बीज पल्लवित एवं पुष्पित हुए। समझदारी एवं प्यार से पारिवारिक जनों को अपने अनुकूल बनाकर 19 फरवरी 1991 को सफीदों मंडी में जैन भगवती दीक्षा अंगीकार की। महाश्रमणी शासन ज्योति गुरुणी श्री सुधा जी महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया।

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात जहां आपने आगमों का अध्ययन किया वहीं संस्कृत में भी स्नातकोत्तर परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम रहकर उत्तीर्ण किया। जिसे आप हमेशा उपप्रवर्तिनी गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की कृपा का प्रसाद मानती हैं जोकि आपकी विनम्रता का प्रतीक है। श्री गुरुणी जी महाराज के मन में आपको डाक्टर के रूप में देखने की प्रबल इच्छा थी। ज्ञान सुपात्र को ही दिया जाता है। आपकी पात्रता को देखते हुए आपको पी.एचडी. के लिए तैयार किया। गुरुणी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज के आशीर्वाद से गुरु भक्त बन्धु युगल श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रविन्द्र जैन प्रथम लेखक पंजाबी जैन साहित्य ने विषय चुना ''उपासक दशांग सूत्र''। बस आप ज्ञान प्राप्ति के प्रति सतत सावधान रहने लगे। आगमों के स्वाध्याय के द्वारा समय गोयम मा पमायए के रहस्य को भलीभांति जानकर भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमादी बन गए। अनेक गुणों के अंकुर आपश्री के जीवन में अंकुरित हो गए।

आपके जीवन को कहीं से झांककर देखो उसी तरह दिखाई देगा जिस तरह गंगा का निर्मल जल किसी भी छोर से पीएं तो मीठा लगेगा, मिश्री को किसी भी कोने से चखो तो मीठी लगेगी, गुलाब के फूल की किसी भी पंखुड़ी को सूंघों तो एक-सी खुशबू आएगी। उसी तरह आपका जीवन सरल एवं मधुर है। आपका सबसे बड़ा गुण है विनम्रता। जिससे आपने अपने जीवन को उन्नत एवं समुज्ज्वल बनाया। जिसके फलस्वरूप आपने

दीक्षा के मात्र 3 वर्ष में ही निरयावलिका सूत्र का संपादन किया और 7वें वर्ष में उपप्रवर्तिनी महासाध्वी गुरुणी श्री स्वर्ण कांता जी महाराज की दीक्षा स्वर्ण जयंती के शुभ अवसर पर महाश्रमणी अभिनंदन ग्रंथ का संपादन कार्य सम्पन्न किया। आप स्वाध्याय में विशेष रुचि रखती हैं। बाल एवं युवा वर्ग को पढ़ाने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहते हैं। आपको इसी गुण को मध्य नजर रखते हुए जैतों मंडी 2008 के चातुर्मास में भी श्री संघ ने ज्ञानोद्धारिका की पदवी से अलंकृत किया। विनम्रता के साथ-साथ आप में वाणी की माधुर्यता एवं वाकपटुता का विशेष गुण है जो जन-जन को बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। समय की पाबंदी का आप विशेष ध्यान रखती हैं। आपका हृदय अत्यंत सुकोमल एवं स्फटिकवत् निर्मल है। कृतज्ञता का गुण आपको उच्च आत्मा के रूप में प्रदर्शित करता है।

आप में जिन शासन की महती प्रभावना की उत्कट अभिलाषा है। वैराग्यावस्था में ही आपने वैराग्य एवं भक्ति प्रधान मुक्तकों की पुस्तिका लिखी और दीक्षा के पश्चात आपने श्री निरयावलिका सूत्र, बड़ी साधु वंदना, पच्चीस बोल एवं विविध विषयों पर प्रश्नोत्तरी संबंधी, मंगलकरणाय पुस्तकों की रचना की। वर्तमान समय में महावीर जीवन चरित्र का महान संपादन कार्य किया जोकि प्रशंसनीय एवं श्लाघनीय है।

प्रस्तुत पुस्तिका 'महावीर जीवन चरित्र' में प्रभु महावीर की जीवन झांकी रोचक एवं सरल ढंग से प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत पुस्तिका की बढ़ती मांग को मद्देनजर रखते हुए इस का चतुर्थ संस्करण प्रकाशित हो जा रहा है। यह प्रकाशन 2552वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव व उपप्रवर्तिनी संथारा साधिका महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की पावन दीक्षा जयंती पर प्रकाशित हो रहा है। मैं मंगलकामना करती हूं और आशा करती हूं कि भविष्य में इस प्रकार के ग्रंथों का प्रकाशन होता रहेगा।

TWO BROTHERS-IN-FAITH COMMITTED TO LITERARY CAUSE

Dr. Dharam Singh

Shri Ravinder Kumar Jain and Shri Purshotam Jain, two brothers-in-faith, have been known for being premier in producing literature on Jainism in Punjabi. During their long association lasted for more than half a century in the service of Jain Sadhus and Sadhvis and serving the literary cause by rendering into Punjabi their scriptural literature writing about their religion and history. They followed entirely different professions – Purshotam was an industrialist dealing in steel industry whereas Ravinder retired from government service as Assistant Agriculture Officer some years back. They have been known in the Jain world as two ascetics in householder's life. I have known them for more than three decades and have been witness to their piety in personal life, ever readiness to serve Jain Sadhus and Sadhvis, and deep commitment to propagate Jain religion and philosophy in Punjabi language.

I feel honored to be asked by Shri Ravinder Jain to write a few words about these two brothers-in-faith. I take it as a matter of pride and pleasure to acknowledge the contribution made by them to the Jain literature in Punjabi, but must admit at the very outset they have already been known rather well in the Jain world throughout India. The Jain Sadhus and Sadhvis, from the Acharya to an ordinary ascetic, as well as the devotees from different sections of society, acknowledge their selfless service and constructive approach to each and every Jain cause. They need no formal introduction, but I take this opportunity of introducing myself to the Jain world through these few lines about these two 'brothers' and their works.

Purshotam Jain was born 10 November 1946 at Dhuri in Sangrur District of the Punjab . His father, Shri Swroop Chan Jain and mother, Smt, Lakshmi Devi Jain, were persons of the religious temperament. Purshotam spent his childhood in an environment saturated with deep faith and commitment, and he enljoyed the company of the holy personages who happened to visit the town and their home. He listened to the discourses of these Sadhus and Sadhvis and tried to live in his life the doctrines explained by them. As a result of these teaching, he imbibed a sense of detachment towards worldly things and became more attached to Lord Mahavira and his message of love and peace. Purshotam was against all sorts of violence and hatred from his childhood days and was more inclined towards peace and harmony and sprituality. He lost no opportunity to be in the company of any Jain ascetic visiting his town or near-abouts. Thus, along with his education in metters spritual and religious, in 1968. In interest in religion and particularly Jain religion encouraged him to take up Religion as an additional subject which he passed from the Punjab University, Patiala in 1976. ShriPurshotam Jain departed from this mortal world in 2023 after a brief illness.

Ravinder Kumar was born on 23 October 1949 at Malerkotla in a family satuated in religious lore. His father, Shri Mohan Lal and Mother Smt. Bimla Devi, were deeply religious couple. Ravinder Jain spend his childhood in the religious evironment and visited along with his parents, many Jain ascetics in and around town. His keen interest in Jain teaching and deep devotion to Jain Sadhus and Sadhvi have been the high point of his personality. Throughout his life he has remained inclined towards spirituality and selfless service. He graduate from Punjabi University, Patiala in 1972 and passed Religion as an additional subject, along with Purshotam Jain in 1976.

A Chance encounter between Purshotam and Ravinder on 31 March 1969 at Malerkotla developed into a long-lasting friendship and soon they became brothers-in-faith. They used to visit together various Jain holy persons, listen to their discourses and discus with them and between themselves the paucity of literature in Punjabi language about the history and philosophy of the Jain faith. Ultimately, they took it upon themselves to prepare books in Punjabi giving fundamental information about the faith. Soon they found in the highly reversed and very well kown Jain Sadhvi,

Swaran Kanta Ji Maharaj, a patron. She not only provided them moral encouragement and inspiration but also secured for them from the community financial assistance for the publication of various projects. Sadhvi Swaran Kanta was on enlightment soul and very good orator. In fact, it was she who discovered and brought out the literary potential in them. She once delivered the Acharya Atma Ram Memorial Lecture at Punjabi University in them. She once delivered the Acharya Atma Ram Memorial Lecture at the Punjabi Univesity which was widely appreciated. The Mahavira Jain chair at the Punjabi University acknowledge her contribution and honoured her with the title of Jain Shashan Prabhavika.

Thus, Ravinder Jain and Purshotam Jain, pioneers in producing literature on Jainism in Punjabi, have been selflessly working in the field for the last about thirty years. It will not be inappropriate to say that they are perhaps the only persons to produce books on Jainism in Punjabi language, but no one else has so far done any significant work in Punjabi. Most of the Jain scriptural literature has been in Prakit/Ardh Magadhi, the reason was to produce such literature in the language comprehensible to common man and to falsify the myth that only Sanskrit was capable of expressing metaphysical/spritual ideas. However, these days even Prakit/Ardh Magadhi is not comprehended by a common devotee in Punjabi were people have Punjabi as their mother tongue. During the reign of King Vikramaditya, these scriptures came to be transcribed in Sanskrit when various Jain scholars and savant received patronage, but none of these texts were attempted in Punjabi despite the fact that the region was closely associated with the life of Lord Mahavira and the development of Jain faith. Ravinder Jain and Pushotam Jain took up the onerous task of rendering the more important of the scriptual texts into simple and easily understandable Punjabi as well as to preprare books on different aspects of the Jain faith.

No doubt, Ravinder and Purshotam have been pioneers in producing literature in Punjabi on Jainism, but this does not imply that they have not written in any other language. Prolific writers as they are, they have produced several book in Hindi as well. For example, their Sachitra Bhagwan Mahvir Jiwan-Charitra, illustrated biography of Lord Mahavir, which they took up under inspiration of Sadhvi Sudha Ji (disciple of Sadhvi Swarn Kanta) and which has been edited by Sadhvi Smriti Ji, a disciple of Sadhvi Sudha Ji. The book, based on the scriptural and other litrature belonging to Svetamber and Digamber and other sects within Jainism, gives on authentic and comprehensive account of the 72 years long life of Lord Manavira. The book has been widely appreciated ana has seen more than one edition. The have also written a biography of Sadhvi Swarn Kanta and an autobiographical book entitled Ashtha Ki Oar Badhate Kadam (Moving Towards Faith).

Ravinder and Purshotam Jain have also contributed to various other books, including volumes in honour of sadhus and sadhvis. The Mahashramni Abinandan Granth, a valume in honour of Sadhvi Swarn Kanta, to which they contributed and which they co-edited, has been widely accepted in Jain academic circles for some of the research papers it includes. The due to Ravinder and Purshotam seem to have been divinely blessed with not just the commitment but also the potential to produce such a vast amount of literature. Also, they have the blessing of all Sadhus and Sadhvis in their tradition to continue their noble work.

We find that their have not been many scholars especially in the field of religious studies who might have worked together for long. There may be several reasons behind it, but it goes to the credit of these who that they have continued working together for decades. Obviously, the main reason behind their long association has been their humility which many in the academic world lack. They have no personal motives excepts the desire to serve their mother-tongue and to cary the Jain message to the Punjabi knowing people. They have been able to work as a team because they are selfless and have the common objective to which they are deeply committed. This has led many to say that they are one soul in two bodies.

If one tries to have a look at the list of books they have produced, one is wonder struck at the huge amount of literature they have produced and are still producing almost all of their works are also available on website, www.jainworld.com, which is accessed from about 150 countries in 27 language editions with 90000 hits per day. This is not an attemp to present to critique of all their works

but is will be worthwhile to make here a mention of the books they have authoreed, edited and translated.

We find that there have Contribution of Purshotam Jain and Ravinder Jain to Punjabi Jain Literature inspiraed by late Jain Nun "Upp Pariwartni Shree Sawaran Kanta Ji Maharaj" Purshotam Jain and Ravinder Jain brothers have jointly presented number of books on Jain Religion in Punjabi Language.

Translation from Ardh Magdhi Prakrit into Punjabi (Gurumukhi Script).

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Shree Utradhyan Sutra	1976
02.	Shree Sutrakritang Sutra	1988
03.	Shree Upasak Dashang Sutra	1976
04.	Suman Sutra	2006
05.	Dashve Kalik Sutra	2007
06.	Bhagwan Mahavir De Chonve Updesh	1976
07.	Updesh Rattan Kosh	2005
08.	Nirevalika Sutra (5 Upanga)	2006
09.	Ghachhachara	1997
10.	Ghachhahara	1998
11.	Sanstarik Prkirnak	1998
12.	Rishi Bhashit Sutra	2007
13.	Dhyan Shatak	2013
14.	Barah Anupreksha	2013
15.	Rayansar	2014
16.	Nitisar Samuchya	2015
17.	Indriyaprajya Shatak	2016

Translation from Hindi (Devnagri) into Punjabi (Gurumukhi Script)

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Bhagwan Mahavir-Sidhant te Updesh	1975
02.	Jain Dharam Darshan	1999
03.	Chanan Munara Mahavir	2009
04.	Aatam Dhyan	2009
05.	Bharti Dharma vich Mukti	2009
06.	Jagat Kalyankari Jain Dharma	2011

Translation from Sanskrit into Punjabi (Gurumukhi Script)

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Bhaktamar Stotra	1985
02.	Kalyan Mandir Satotra	1986
03.	Sindhur Parikaran	2004
04.	Prashanoter Rattan Malika	1987
05.	Ath Prashanotra Rattan Malika	1987
06.	Shri Sambeg Kandli Drum	2009
07.	Satt Darve Panchasika	2008
08.	Istoupdesh	2011
09.	Smadhitantra	2012
10.	Shant Sudha Ras	2012
11.	Dravya Sangrah	2014
12.	Ratankrand Shrawakchar	2015

Punjabi Jain Literature (Gurumukhi Script)

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Bhagwan Mahavira : A Biography of Lord Mahavir	1976
02.	Jain Dharam : Ek Sankhep Jankari	1988
03.	Puratan Punjabi vich Dharam	1987
04.	Jain Sahit Te Sanskriti Dei Ruprekha	1976
05.	Jain Agam ek Jankari	1978
06.	Bharti Sahit Vich Bhagwan Mahavir	1988
07.	Jain Dharam De Itihask Mahapurakh	1988
08.	Bodh Sahit Vich Bhagwan Mahavir	1999
09.	Gandharwad	1988
10.	Jain Kahaniyan	2009
11.	Sachitra Bhagwan Mahavir	2016

Books in Hindi Written by Purshotam Jain (Edited by : Ravinder Jain)

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Aastha Ki our Badhte Kadam	2005
02.	Anjane Rishte	1998
03.	Smarpit Jiwan	1987

Books in Hindi Written by Purshotam Jain & Ravinder Jain

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Mahasharmni	1987
02.	Prachin Punjab Mein Jain Dharam	1999
03.	Sachitra Mahavir Jivan Charitra II Edition	2009

Book in Hindi Written by Ravinder Jain

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Shramnopasak	1987

Edited Books

Sr. No.	Name of Book	Publication Year
01.	Aasthanjli	1987
02.	Maha Shramni Abhinandan Granth	1999
03.	Nirewalika Sutra (5 Opang)	1987

The labour of love put in by Ravinder Jain and Purshotam Jain has been acknowledge and their work widely appreciated by the Jain World as well as by various other social and literature organizations. Though they live in humility and comparative obscurity yet many honours have come their way. There have been innumerable occasions when they have honoured by different organizations within the Jain world, and the limitations of space may not allow mention of all of them. The President of India Giani Zail Singh, invited them to the Rashtrapati Bavan in Delhi and honoured them (on 26.02.1987) with the title of Sramanopasak. The Languages Department of the Punjab Government at its function at Sirhand on 25.12.1997, honoured them which a shawl and certificate of

commendation. Their work has also been acknowledged by the UNESCO which honoured them with Hindi Sahastra Sevy.The Jain World Foudation at Alphatretta, in the USA also acknowledge their contribution to Jain Tradition, and Ms Elizebeth Lehemann, Chairperson of the Award Committee of the Foundation, called them the “Jewels of Jain World” and commended them “for their outstanding and historical service of the cause of Jainism by bringing Jain literature in Punjabi langauge for the first time in history.” But none of these and various other honours and awards they have got has bone to their heads and they continue to serve the cause dear to their heart with the same humility and selflessness.

May God bless Shri Ravinder Jain many, many more years of fruitful and meaningful life and he continues his efforts to promote Jainism and, in the process, make human social life happier.

शुभ कामनाएं व संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिंदी भाषा में 'सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र' का चौथा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। यह धार्मिक पुस्तक जैन धर्म की एक विशिष्ट धरोहर बन गई है जो कि लेखक स्व. श्री पुरुषोत्तम जी जैन (मंडी गोबिंदगढ़) तथा श्री रवींद्र जी जैन (मालेरकोटला) की धर्म लेखन साधना का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन दोनों महापुरुषों से मिलने का कई बार मौका मिला जो कि किसी साधु की संगत से कम न होता। दोनों धर्म पिताओं से भेंट उपरांत संत कबीर जी का दोहा स्मरण आता

'कबिरा संगति साधु की, हरे और की व्याधि।
संगति बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि।।'

मिलन के उपरांत सदैव जानकारी व ज्ञान में वर्धन होना स्वभाविक रहता।

दोनों लेखक भाईयों ने जैन धर्म इतिहास को एक नया आयाम दिया है। वर्तमान पुस्तक के साथ-साथ इनके पंजाबी भाषा में जैन धर्म के साहित्यिक योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इनकी पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के धर्म विभाग में 'जैन चेयर' को स्थापित करवाने में विशेष भूमिका रही और दोनों मित्रों ने उपप्रवर्तिनी, संथारा साधिका श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से लगभग 60 जैन धर्म ग्रंथों को प्राकृत (अर्ध मागधी), हिंदी या संस्कृत से मातृ भाषा पंजाबी में अनुवादित किया। इस लेखक जोड़ी ने न केवल पंजाबी भाषा की सेवा की है अपितु इनके पंजाबी भाषा में रचित जैन धर्म ग्रंथों के कारण आज विश्वविद्यालयों में गैर जैन पंजाबी नौजवानों को जैन धर्म-दर्शन में एम.फिल. व पी.एच.डी. कोर्स करने का मौका मिला है।

शोधों में पाया गया है कि मानव की कुल सीख (लर्निंग) में से अधिकतम 83 प्रतिशत सीख केवल चित्र या चलचित्र पर आधारित होती है। वर्तमान धार्मिक पुस्तक 'सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र' का सचित्र होना तथा चौथे संस्करण का प्रकाशित होना दोनों बातों का उल्लेख करता है। प्रथम-पुस्तक सचित्र होने के कारण प्रभावशाली है और पाठक के मस्तिष्क में गहरी छाप छोड़ने में सक्षम रही है। द्वितीय-यह विश्वसनीय है, जो पाठकों की मांग के कारण चौथी बार प्रकाशित होने जा रही है। विश्वसनियता का मूल कारण इसके अनुभवी लेखकों के साथ-साथ इस पुस्तक की विश्वसनीय संपादिका डा. श्री स्मृति जी महाराज का होना भी है। साध्वी श्री जी का धर्म अध्ययन स्वयं में अद्वितीय है।

मैं समझता हूं कि वर्तमान संस्करण जहां स्व. श्री पुरुषोत्तम जी जैन (मंडी गोबिंदगढ़) को सच्ची श्रद्धांजलि है वहीं, लेखक श्री रवींद्र जी जैन (मालेरकोटला) के लिए नव प्रोत्साहन है।

निखिलेश जैन 'नवल', मालेरकोटला
लैक्चरार (कॉमर्स), स्कूल शिक्षा विभाग पंजाब
मीडिया सलाहकार, विश्व जैन संगठन पंजाब
मीडिया सलाहकार, अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक समाज पंजाब
मीडिया प्रभारी, एस. एस. जैन सभा, मोती बाजार, मालेरकोटला (पंजाब)

किंचिद्वक्तव्य

'सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र' जैनधर्म की एक महत्वपूर्ण कृति है। इसके लेखक स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रवीन्द्र जैन जी हैं। पंजाबी भाषा के विशेषज्ञ एवं जैन-धर्म-दर्शन की अहर्निश सेवा करने वाले दोनों लेखकों ने अपनी इस कृति को पूज्य गुरुणी संथारा साधिका उपप्रवर्तिनी साध्वीरत्न श्री स्वर्णकांता जी महाराज को सादर समर्पित किया है। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ का संपादन साध्वी डॉक्टर स्मृति जी महाराज ने किया है। इस ग्रंथ का प्रणयन साध्वी श्री सुधा जी महाराज की पावन प्रेरणा से हुआ और इस कार्य को साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज का भी अत्यंत वात्सल्य भरा आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस ग्रंथ के सृजन के पीछे श्रमणसंघ के आराध्य संतो का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष आशीर्वाद मिला। इस क्रम में आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषि जी महाराज, आचार्य सम्राट श्री आत्माराम जी महाराज, आचार्य सम्राट श्री देवेंद्र मुनि जी महाराज का जहां आशीर्वाद प्राप्त हुआ वहीं आचार्य सम्राट श्री शिवमुनि जी महाराज की ज्ञान गरिमा के अनुरूप इस ग्रंथ को आकार मिला एवं विद्वानों के विचारों को इसमें स्थान मिला। पंजाबी भाषा के दोनों साहित्यकार श्री पुरुषोत्तम जैन एवं रवीन्द्र जैन ने अपनी अथक मेहनत से जैन विद्या का पंजाबी भाषा में अधिकाधिक लेखन कर प्रकाशित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने 'सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र' को हिंदी भाषा में प्रस्तुत कर भगवान महावीर के जीवन को अत्यंत सुगमता से प्रस्तुत करने का बड़ा ही सार्थक प्रयास किया है। कथाओ का सचित्र वर्णन लोगों को प्रारंभ काल से ही बड़ा प्रिय रहा है, यही कारण है कि इस पुस्तक में इस विधा का अनुपालन किया गया है। लेखन सिद्धांत को प्रस्तुत करता है किंतु चित्रांकन उसी सिद्धांत को प्रयोग रूप में दिखा देता है। महासाध्वी स्वर्णकांता जी महाराज से प्रेरणा प्राप्त कर इन दोनों लेखकों ने इस कार्य को इस पुस्तक में बखूबी निभाया है। दोनों लेखक धर्म-भ्राता के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं। मुझे इन दोनों धर्म- भ्राताओं के वात्सल्य का प्रसाद जब तक पंजाबी यूनिवर्सिटी में रहा हूं तब तक तो मिलता ही रहा और जब वहां से काशी हिंदू विश्वविद्यालय आ गया तो भी मिलता रहा है। आज जब प्रस्तुत पुस्तक के संबंध में दो शब्द लिख रहा हूं तो स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन जी की दैहिक अनुपस्थिति मन को भावुक कर रही है। उनके छोटे धर्म-भाई श्री रवीन्द्र जैन अपने को एकाकी और स्तब्ध पा रहे हैं। स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन की रिक्तता को मैं अपूरणीय क्षति के रूप में ही पाता हूं। ऐसा उत्साही जीवन साधु-संतों एवं साध्वियों के सुख-साधन एवं विद्वानों के मान-सम्मान के प्रति ऐसा समर्पण रखने वाला उत्साही व्यक्तित्व मैंने अपने जीवन में उनसे पूर्व कभी नहीं देखा था। 2004 से लेकर 2017 तक पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला में चाहे आचार्य आत्माराम स्मृति व्याख्यान हो या फिर आचार्य तुलसी स्मृति व्याख्यान या आचार्य महाप्रज्ञ राष्ट्रीय सेमिनार हो सब में श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रवीन्द्र जैन की उपस्थिति ने मेरा मनोबल ही नहीं बढ़ाया बल्कि मेरा मार्गदर्शन भी किया। उनके द्वारा दी गई किताबें आज भी मेरे पास हैं। श्री पुरुषोत्तम जी की प्रत्येक यात्रा प्रायः साधु संतों के दर्शन के लिए ही होती थी और उनके साथ उनकी कार में कई स्थानों पर जाने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ तथा उन्होंने जो अपने साथ फोटो खिंचवाए उन चित्रों के माध्यम से वे स्मृतियां आज भी मेरे हृदय में संजोई हुई हैं। अब तक इस पुस्तक के सारे संस्करण उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हुए किंतु अब जब यह संस्करण निकल रहा है तो वे हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी अनुपस्थिति में प्रकाशित होने वाले इस संस्मरण में उन्हें शब्दों के माध्यम से श्रद्धांजलि देना यह मेरा दायित्व है और मेरी इसी श्रद्धांजलि में दोनों लेखकों में से एक श्री रवीन्द्र जैन जी की उनके प्रति गहरी श्रद्धा के भी शब्द समाहित हैं।

प्रोफेसर प्रयुम्न शाह सिंह
जैन बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान फैकेल्टी,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी

भगवान महावीर की सचित्र जीवन यात्रा एक अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर

सम्माननीय स्वण् श्री पुरुषोत्तम जैन एवं श्री रविंदर जैन, साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने अथक प्रयासों के साथ इस जनोपयोगी ग्रन्थ का सृजन किया जिससे अनेक भक्त लाभान्वित हो रहे हैं।   भगवान महावीर स्वामी का जीवन मानवता के लिए एक अमिट प्रेरणास्त्रोत है। उनके जन्म से लेकर मोक्ष प्राप्ति तक की प्रत्येक घटनाए प्रत्येक उपदेश और प्रत्येक तप साधना में एक गूढ़ संदेश निहित है -आत्मशुद्धि, अहिंसा और अपरिग्रह का। आज के युग में जब समाज भौतिक प्रगति के साथ मानसिक शांति की खोज में भटक रहा है ऐसे समय में भगवान महावीर का जीवन संदेश एक दीपस्तंभ की भाँति मार्गदर्शन करता है।

इस पावन उद्देश्य को लेकर भगवान महावीर की सम्पूर्ण सचित्र जीवन यात्रा को पुस्तक रूप में संकलित कर जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करना वास्तव में एक सार्थक और अनुकरणीय पुरुषार्थ है। यह केवल एक ग्रंथ का प्रकाशन नहीं बल्कि एक युगधर्म का पुनर्जागरण है।

इस कृति के माध्यम से पाठक भगवान महावीर के जीवन के प्रत्येक चरण- जन्म, दीक्षा, तपस्या, ज्ञानप्राप्ति, उपदेश काल और मोक्ष - का न केवल दर्शन करेंगे बल्कि उनके संदेशों की आत्मा को भी अनुभव करेंगे। चित्रों के माध्यम से जीवन की घटनाएँ सजीव होकर आत्मा में स्पंदन उत्पन्न करती हैं जिससे अध्ययन केवल बौद्धिक नहीं बल्कि आत्मानुभूति का माध्यम बन जाता है।

इस पुस्तक के प्रकाशन से न केवल समाज के हर वर्ग को भगवान महावीर के आदर्शों का सुलभ ज्ञान होगा बल्कि नई पीढ़ी में भी जैन धर्म के मूल सिद्धांतों - अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अचौर्य - के प्रति आस्था और जागृति उत्पन्न होगी।

वास्तव में यह ग्रंथ श्रद्धा, अध्ययन और साधना का संगम है - एक ऐसी अनमोल आध्यात्मिक धरोहर जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बनेगी। भगवान महावीर के चरणों में यह कृति समर्पित करना, आत्मा के कल्याण और समाज के उत्थान के लिए किया गया एक दिव्य पुरुषार्थ है।

पं. मुकेश जैन शास्त्री
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी
श्री महावीर जी, जिला करौली, राजस्थान

शुभकामना संदेश

संथारा साधिका, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 'सचित्रष् भगवान महावीर जीवन चरित्र' के चतुर्थ संस्करण के प्रकाशन पर संपादिका साध्वी डॉ स्मृति जी महाराज को नमन करते हुए लेखक श्री पुरुषोत्तम जैन जी व श्री रविंद्र जैन जी को बहुत बहुत साधुवाद व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

भगवान महावीर के सिद्धांतों से ही विश्व में शांति की स्थापना की जा सकती है। भगवान भगवान के जीवन पर आधारित यह सचित्र ग्रंथ निश्चित रूप से जन जन के कल्याण एवं विश्व में शांति स्थापना करने में सार्थक सिद्ध होगी।

सुदीप जैन
विश्व श्रमण संस्कृति श्रीसंघ, मेरठ

सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र . चौथा संस्करण

तीर्थंकर परमात्मा भगवान महावीर स्वामी नियतिवाद में विश्वास नहीं करते थे। वे यह नहीं मानते थे कि जीवन किसी अदृश्य भाग्य या पूर्वनिश्चित नियमों से संचालित होता है। उनका विश्वास केवल पुरुषार्थ में था, निरन्तर सजग और अडिग पुरुषार्थ में। उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि कोई 'सही दिन' आयेगा और सब कुछ स्वयं बदल जायेगा। उन्हें कोई आकस्मिक आलोकदीप्ति नहीं मिली। उनका मोक्ष अचानक प्राप्त नहीं हुआ, वह था अनवरत साधना, अदम्य धैर्य और अचल पुरुषार्थ का फल। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने पुरुषार्थ के बल पर ही प्रारब्ध को पराजित किया। वे जानते थे कि उनके जीवन की दिशा कोई बाहरी शक्ति निर्धारित नहीं कर सकती।

भगवान महावीर को यह पूर्णतः स्पष्ट था कि वे सम्पूर्ण मानवता के उद्धारक नहीं हो सकते। वे केवल मार्गदर्शक और उत्प्रेरक बन सकते थे, एक ऐसा प्रकाशपुंज जो दूसरों को अपने भीतर का प्रकाश देखने की प्रेरणा दे। प्रत्येक आत्मा अपने भाग्य की स्वयं स्वामिनी है। किसी अन्य के पुरुषार्थ से किसी का मोक्ष सम्भव नहीं।

तीर्थंकर के रूप में उन्होंने चारगुणी धर्मतीर्थ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका की स्थापना की। यह धर्मतीर्थ ऐसा सेतु था जिससे प्रत्येक जीव स्वयं अपने उद्धार का पथ खोज सके। उन्होंने पहले अपने भीतर शुद्धता और स्थिरता प्राप्त की और फिर उसी अनुभूति से जगत को मार्ग दिखाया। महावीर केवल दार्शनिक नहीं थे, वे अपने धर्म और दर्शन के व अपनी आत्मा के त्रैकालिक वैभव के सजीव उदाहरण थे। उनका दर्शन उनके आचरण में झलकता था।

भगवान महावीर ने प्रतिपादित किया कि कर्मों का क्षय केवल सम्यक् आचरण से होता है। उन्होंने अनुभव किया कि प्रत्येक आत्मा अद्वितीय, स्वतन्त्र और विशिष्ट सत्ता है जो न किसी की दासी है और न किसी की स्वामिनी। वे अपने में स्थित रहे। अपने भीतर चिन्तन किया। उन्होंने किसी की उपासना नहीं की, न मन्दिर बनवाये, न तीर्थयात्राएँ कीं। उनकी साधना मोक्षलक्षी थी, पूर्णतः आत्मकेन्द्रित और अन्तर्मुखी।

भगवान महावीर ने सांसारिक विषयों में किसी को परामर्श नहीं दिया, न भविष्यवाणियाँ कीं, न चमत्कार दिखाये। उनका सम्पूर्ण जीवन समत्व और शान्ति की मूर्ति था, स्थिर, विचारशील और पूर्णतः सन्तुलित। उनके प्रत्येक निर्णय गहन चिन्तन का परिणाम था और उनका संदेश अत्यन्त सरल 'किसी को हानि मत पहुँचाओ, कोई तुम्हें हानि नहीं पहुँचायेगा।' उन्होंने सिखाया कि वास्तविकता का बोध (सम्यग्दर्शन) ही मुक्ति का आधार है। भेदज्ञान प्राप्त करो। जो आत्मा है और जो अनात्मा है, जो शाश्वत है और जो क्षणभंगुर है, उनके बीच अन्तर पहचानो। समझो कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के केवल परिवर्तन का कारण बन सकता है, उसका स्थान नहीं ले सकता। प्रत्येक द्रव्य का परिवर्तन उसके अपने धर्म, उसके अपने स्वभाव पर निर्भर करता है। क्षणिक सुखों के पीछे मत भागो। इस संसार में हमारा ठहराव केवल अस्थायी है। संयमित, अनुशासित और सुव्यवस्थित जीवन ही आध्यात्मिक विकास का प्रथम सोपान है।

भगवान महावीर का सत्यान्वेषी चिन्तन साधक को सीधे मोक्षमार्ग की ओर ले जाता है। बस उनकी सीख हमारे संकल्प और हमारे आचरण में प्रतिबिम्बित होनी चाहिये, यही साधना का सार है।

मेरे मित्र एवं बड़े भाई श्री रविन्दर जैन (मलेरकोटला) तथा उनके मित्र और निकट सहयोगी स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन (पंजाब) ने मिलकर एक उत्कृष्ट पुस्तक की रचना की है, अन्तिम तीर्थंकर परमात्मा के जीवन को उकेरती हुई। अब शीघ्र ही इस पुस्तक का चौथा संस्करण पाठकों के समक्ष उपस्थित होने जा रहा है। यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि उनके श्रम और समर्पण को व्यापक प्रशंसा मिल रही है। एक छोटे भाई के रूप में मेरी हार्दिक शुभकामना है कि आदरणीय रविन्दरभाई इसी प्रकार आत्ममन्थन और आत्मकल्याण के मार्ग में निरन्तर अग्रसर रहें और आत्मानुभूति की प्राप्ति शीघ्र करें।

मनीष मोदी, मुम्बई

शुभकामना संदेश

सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र पुस्तक के प्रकाशन का समाचार अतीव प्रसन्नता सूचक है। यह हर्ष तब और चौगुना बढ़ जाता है, जब इस पुस्तक का चौथा संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

इस पुस्तक के लेखक देवलोक वासी पुरुषोत्तम जैन और स्वनामधन्य श्री रवीन्द्र जैन धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में तीर्थंकर भगवान महावीर के जीवन चरित्र को प्रामाणिक स्रोतों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इसकी सुधी पाठकजन्य लोकप्रियता इसी बात से स्वयंसिद्ध है कि आज के समय में जब गंभीर पुस्तकों की पठनीयता कम हो रहु है इस पुस्तक को चौथी बार प्रकाशित कराना पड़ रहा है।

इस पुस्तक की प्रेरणास्रोत वंदनीया साध्वी सुधाजी महाराज रही हैं। भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण दिवस व संथारा साधिका उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दीक्षा महोत्सव पर यह चौथा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। भगवान महावीर के प्रति श्रद्धावनत हूं तथा गुरणी स्वर्णकांता जी महाराज की वंदना करता हूं देवलोकवासी पुरुषोत्तम जैन जी को कोटिशः नमन।

डा. अतुल कुमार सिंह,
प्राकृत- जैनशास्त्र अध्येता

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि देवादिदेव श्री1008 भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव वर्ष और संथारा साधिका, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की दीक्षा जयंती पर स्वर्गीय पुरुषोतम जैन और रविंदर जैन द्वार लिखित ग्रंथ के चतुर्थ संस्करण का प्रकाशन डॉ. स्मृति जी महराज के संपादन में किया जा रहा है। मैं देवादिदेव श्री1008 भगवान महावीर स्वामी के चरणों की वंदना करता हूँ और श्री सुधा जी महाराज साहब को नमोत्सू निवेदित करता हूँ। मैं आदरणीय स्वर्गीय पुरुषोतम जी को नमन करता हूँ और आदरणीय श्री रविंदर जैन को इस ग्रन्थ के प्रकाशन हेतु बधाई और शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। इस ग्रंथ के प्रकाशन हेतु दानी संस्था और समारोह आयोजकों को भी बधाई प्रेषित करता हूँ।

डॉ. मनोज जैन, दिल्ली

यह जान कर बहुत खुशी हुई कि **सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र** पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । यह पुस्तक जैन परंपरा के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर की एक उच्चकोटि की सचित्र और भक्तिपूर्ण जीवनी है। लेखक जोड़ी श्री रवीन्द्र जैन एवं स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन जी ने बहुत ही प्रेम और भक्तिभाव से जो कार्य किया था अब वो फिर से पाठकों को अर्पण किया जा रहा है।

जैन धर्म और महावीर के बारे में विस्तृत जानकारी से भरपूर इस पुस्तक से निश्चित ही सभी पीढ़ियों के पाठकों को प्रेरणा और शिक्षा मिलेगी। अन्य धर्मों से सम्बंधित लोग भी इस पुस्तक के माध्यम से जैन धर्म और महावीर के बारे में जान सकते हैं ।

जैन धर्म का सद्भावना, सहनशीलता और अहिंसा का संदेश सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने की क्षमता रखता है । मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक से जैन धर्म और महावीर का संदेश और फैलेगा। इस पुस्तक से सम्बंधित सभी लोगों को में हार्दिक बधाई देता हूँ।

डॉ. गुरप्रताप सिंह, मोहाली, पंजाब

आदरणीय श्री रवीन्द्र जी यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि भगवान महावीर की पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। यह इस पुस्तक की लोकप्रियता का द्योतक है। इस पुस्तक में भगवान महावीर ने जहाँ-जहाँ विहार किया उसकी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। नये संस्करण के लिए हमारी बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनायें।

डॉ अनिल कुमार जैन, जैन एकैडमी आफ सकोलर्ज, जयपुर

शुभकामना संदेश

श्री रविंदर जैन जी को अत्यंत प्रेरणादायक पुस्तक **सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र** के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई। यह इस पुस्तक का चौथा संस्करण है और स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन जी के साथ उनके उल्लेखनीय सहयोग की एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक और साहित्यिक उपलब्धि है।

यह प्रकाशन स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम जैन जी की स्थायी विरासत को एक मार्मिक श्रद्धांजलि भी है। उनकी आध्यात्मिक प्रज्ञा इस परियोजना की नींव थी और यद्यपि उनकी बहुत याद आती है, उनकी आत्मा इन पन्नों में जीवित है। मैं श्री रविंदर जैन जी के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने अपने साझा दृष्टिकोण को साकार करने के लिए अथक प्रयास किया।

यह ग्रंथ भगवान महावीर स्वामी के 2552वें निर्वाण वर्ष के शुभ अवसर पर प्रकाशित किया जा रहा है और यह संथारा साधिका, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के दीक्षा दिवस को समर्पित है। इस ग्रंथ की संपादिका विदुषी डॉ. स्मृति जी महाराज हैं। मैं उनकी चारित्र आत्मा को कोटि-कोटि नमन करती हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक न केवल सराही जाएगी बल्कि अनगिनत घरों में प्रेरणा का एक अनमोल स्रोत भी बनेगी। यह पुस्तक भगवान महावीर के शांति और करुणा के संदेश को दूर-दूर तक फैलाने में सफल हो।

डा. सविता जैन, लुधियाना

तीर्थकर महावीर के जीवन पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं किन्तु यह पुस्तक संक्षिप्त एवं प्रामाणिक रूप में प्रभु महावीर के जीवन चरित्र को प्रस्तुत करती है। भूमिका में तीर्थ कर महावीर के जीवन से सम्बद्ध प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश भाषा के साहित्य के साथ राजस्थानी एवं आधुनिक हिन्दी साहित्य का भी उल्लेख किया गया है। तीर्थंकर परम्परा का परिचय देने के साथ भगवान महावीर के पूर्वभवों का वर्णन किया गया है। महावीर के जन्म, बाल्यकाल, यौवन एवं दीक्षा कल्याणक के अनन्तर साधनाकाल का वर्षवार उल्लेख किया गया है। तीर्थकर महावीर को केवलज्ञान होने के अनन्तर वेदज्ञ 11 पण्डितों के साथ उनका दार्शनिक विषयों पर जो संवाद हुआ है उसे भी संक्षेप में स्थान दिया गया है। ये सभी पण्डित तीर्थकर महावीर के श्रीमुख से प्रव्रज्या अंगीकार कर गणधर बने थे। अपने पूर्ववर्ती साहित्य का अध्ययन करने के अनन्तर यह पुस्तक रोचक रूप में लिखी गई है। पुस्तक को अनेक चित्रों से सज्जित किया गया है। श्री पुरुषोत्तमजी जैन एवं श्री रवीन्द्रजी जैन ने पंजाबी भाषा में जैन साहित्य को समृद्ध करने के साथ हिन्दी साहित्य को भी इस पुस्तक के माध्यम से समृद्ध किया है।

श्री पुरुषोत्तमजी एवं रवीन्द्रजी के द्वारा इस पुस्तक का चतुर्थ संस्करण तीर्थंकर महावीर के 2552वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके लिए वे अभिवन्दनीय हैं। **- डॉ. धर्मचन्द जैन**

संदर्भयोग्य पुस्तक है सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र

भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक वर्ष (2000) में विद्वान लेखकद्वय श्री पुरुषोत्तम जैन (अब कीर्तिशेष) और श्री रवीन्द्र जैन ने अथक परिश्रम से **सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र** पुस्तक लिखी थी। उपप्रवर्तिनी साध्वी श्री स्वर्णकांताजी की सुशिष्या साध्वी श्री सुधाजी की प्रेरणा से लिखित पुस्तक के अनेक संस्करण प्रकाशित हुए। सुखद है कि यह क्रम आज भी गतिमान है और इसकी अगली आवृत्ति का प्रकाशन किया जा रहा है। यह इस पुस्तक की महत्ता, उपयोगिता और लोकप्रियता का प्रमाण है। इसके लेखन में प्राचीन, अर्वाचीन और आधुनिक सभी प्रामाणिक स्रोतों का उपयोग और उल्लेख किया गया है। जहाँ कहीं मान्यता भेद हैं, उन्हें स्पष्ट किया गया है। पाँच खंडों में वर्गीकृत इस पुस्तक में भगवान महावीर के जीवन का सरल, सरस सटीक और समग्र वर्णन किया गया है। यह संदर्भयोग्य, सहेजने योग्य, पठनीय और मननीय पुस्तक है। पुस्तक के पुनर्प्रकाशन पर हार्दिक बधाई।

- डॉ. दिलीप धींग, पूर्व निदेशक अंतरराष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र,
उपाध्यक्ष : तमिलनाडु हिंदी अकादमी, साहुकारपेट, चेन्नई

I am very happy to know that Fourth edition of "Sachittra Bhagwan Mahavira Jiwan Charitra" authored by you is being published on the auspicious occasion of 2552 th Bhagwan Mahavir Nirwan Kalyanak and Diksha Jayanti of Shri Swarn Kanta Ji Maharaj

Over the last several years you have done historic contribution by creating Jainism related material in Punjabi for the first time in the history and also in other languages for the benefit of humanity around the globe.

Congratulations on publication of Fourth edition of this valuable book. **- Elizabeth Lehman**

आभार !

स्व. पुरुषोतम जैन और श्री रवींद्र जैन इन दो विचारवंतो ने एक अमुल्य ग्रंथ की निर्मिती कि है। उस ग्रंथ का नाम है - सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र। इस ग्रंथ की चौथी आवृती प्रकाशित हो रही है, इस कारण लेखक को बहुत मंगल कामना। साथ साथ इस ग्रंथ को पूजनीय आचार्य, पूजनीय साधू- साध्वी इनका शुभाशीर्वाद प्राप्त हुआ है, यह इस ग्रंथ की यशस्वीता है। पुरुषोत्तम जैन और रवींद्र जैन इन दो विद्वानो का जैन साहित्य में बड़ा योगदान रहा है। दोनो भी पंजाब के है अर्थात पंजाबी भाषा में उनका लेखन अधिक रहा है परंतु वे केवल पंजाबी भाषा तक सिमीत नहीं रहे है। स्वाभाविक है की प्रतिभावान व्यक्ति कभी किसी सीमा में सिमटकर नहीं रहता उसकी प्रतिभा हर क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास करती रहती है। इसी कारण इन्होने हिंदी भाषामें भी साहित्य का निर्माण किया है। प्रस्तुत ग्रंथ इसका प्रमाण है।

'सचित्र भगवान महावीर जीवन चरित्र' इस ग्रंथ द्वारा भगवान महावीर का चरित्र बहुत सहज भाषा में पाठको के सामने रखा है। अनुभव ऐसा है की कठिन हिंदी में लिखे गये साहित्य को पढने में कुछ दिक्कत महसूस होती है परंतु इस ग्रंथ की भाषा बहुल सरल और पाठक का मन पकडकर रखने वाली है। यह इस ग्रंथकी विशेषता है।

इस ग्रंथ से भगवान महावीर के पूर्व भव की कहानीयाँ गर्भ कल्याणक, जन्मकल्याणक, महावीरजी का बचपन, किशोरावस्था, संसार का त्याग, तपश्चर्या, परिषह, केवलज्ञान प्राप्ती, समवशरण इन सब का वर्णन दिल और दिमाग को स्पर्श करता है। साधना काल के समय मे घटित घटनाएं भगवान महावीर की वीरता का, संयम का और क्षमाशीलता का प्रमाण देती है। जैन परंपरा के चौबीस तीर्थंकरों मे से एक भगवान महावीर ही ऐसे तीर्थंकर है जिन्होने बारह वर्ष व छह माह तपश्चर्या की है। भगवान महावीर की इस महानता को लेखको ने सुंदर पद्धती से शब्दबद्ध किया है। गोशालक से संवाद, गणधरों से प्रश्नोत्तर इस ग्रंथ का ज्ञान का भंडार है। जैन धर्म के तत्त्वज्ञान का परिचय भी मिलता है।

एक सबसे उत्कृष्ट, उल्लेखनीय, महत्त्वपूर्ण बात इस ग्रंथ की है, वह यह है की इस ग्रंथ मे श्वेतांबर और दिगंबर इन दोनो परंपरा को विचार में लिया है। मान्यताओं को विचार में लिया है। ऐसा करते समय किसी भी परंपरा की कही भी अलोचना नहीं है। हमे ऐसा ज्ञानदायी, निष्पक्ष ग्रंथ उपलब्ध करके देने वाले स्व. पुरुषोतम जैन और श्री रवींद्र जैन इन विद्वानो का मैं तहेदिल से आभार प्रकट करता हूं।

- विठ्ठल साठे, जैन विचार मंच

भगवान महावीर के जीवन दर्शन से संबंधित महत्वपूर्ण एवं प्राचीन सामग्री को शोधपूर्ण तरीके से एक साथ प्रस्तुत करने वाली इस पुस्तक के प्रस्तोता द्वय स्व. श्री पुरुषोत्तम जैन तथा श्री रविन्द्र जैन धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक के अवलोकन से ज्ञात होता है कि लेखक द्वय ने अर्धमागधी, प्राकृत के पारम्परिक साहित्य का गंभीर अध्ययन करने के उपरांत प्रस्तुत पुस्तक की आधार भूमि तैयार की है जिससे पुस्तक में तथ्य संबंधी समग्रता आ गई है। अन्य सहायक सामग्री का भी प्रस्तुति में यथा अवसर उपयोग किया गया है। विषय वस्तु की दृष्टि से पुस्तक पठनीय, संग्रहणीय है। चतुर्थ संस्करण की आवश्यकता से पुस्तक की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है। लेखकों के प्रति मेरी सद्भावना है और उनसे अपेक्षा है कि वे इसी प्रकार अन्य विषयों की ओर अपना सुदीर्घ अनुभव तथा अमूल्य चिन्तन लगाएं जिससे शाश्वत जिनवाणी का सतत प्रचार-प्रसार प्रशस्तता प्राप्त कर सके।

- डा ऋषभचंद जैन, निदेशक, प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली (बिहार)

सचित्र

भगवान महावीर

जीवन चरित्र

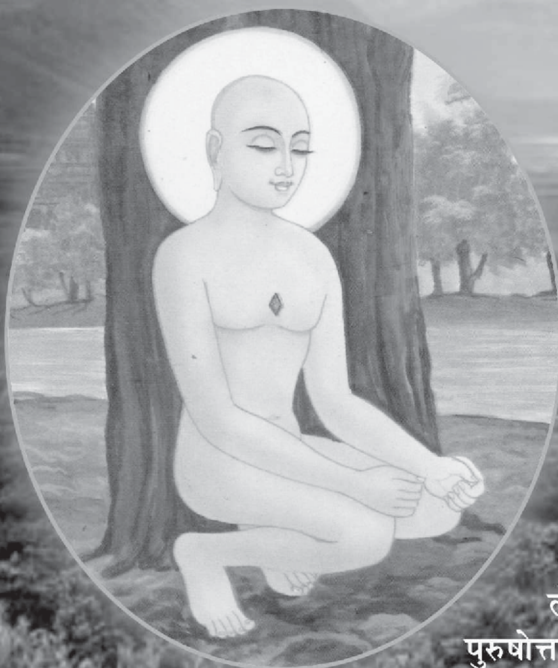

लेखक
पुरुषोत्तम जैन स्मृतिशेष
रवीन्द्र जैन

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका	कहां ?

खण्ड १

(१) श्रमण संस्कृति की रूपरेखा 3
(२) जैन मान्यताओं के आरों का संक्षिप्त वर्णन : सृष्टि विकास की कहानी 6
(३) जैन धर्म की तीर्थंकर परम्परा : एक विश्लेषण 8
(४) आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव 15
(५) अन्य तीर्थंकरों के विषय में आवश्यक जानकारी (तीर्थंकर चरित्र) 17

खण्ड २

(१) भगवान महावीर : पूर्व भवों का वर्णन 23
(२) भगवान महावीरकालीन परिस्थितियां 40
(३) महावीर का जन्म-महोत्सव, बचपन, विवाह व संकल्प 45
(४) दीक्षा कल्याणक 63

खण्ड ३

(१) साधनाकाल 67

खण्ड ४

(१) केवलज्ञान महोत्सव 115
(२) गणधर संवाद 120
(३) तीर्थ स्थापना 144

खण्ड ५

(१) तीर्थंकर महावीर द्वारा धर्म प्रचार 149